RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण
वर्ष-13, अंक-02, हिन्दी (मासिक), फरवरी 2026, पृष्ठ 16, मूल्य- 17:50

15 सर्वश्रेष्ठ रेजिडेंशियल यूनिट का प्रथम पुरस्कार...

मेडिकल प्रोफेशनल्स की जिंदगी बदल रहा विहासा प्रोग्राम, विश्वभर के 50 देशों में संचालित

विहासा प्रोग्राम की परिकल्पना

दस हजार घंटे मनन-चिंतन और शोध से साकार हुई

मनोचिकित्सक, मनोवैज्ञानिक, स्वास्थ्य सलाहकार और योगा एक्सपर्ट ने गहरे शोध के बाद डिजाइन किया प्रोग्राम

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

ब्रह्माकुमारीज़ के लंदन स्थित ग्लोबल को-ऑपरेशन हाउस की नौ विषय विशेषज्ञों की टीम ने एक ऐसा माड्यूलर ट्रेनिंग प्रोग्राम डिजाइन किया है जो आज वर्किंग प्रोफेशनल्स की जिंदगी बदलने में मील का पत्थर साबित हो रहा है। इसे लागू करने के पूर्व पूरी टीम ने दस हजार घंटे तक गहन मनन-चिंतन और शोध कर पूरे प्रोग्राम को डिजाइन किया है, जिसे नाम दिया गया है- **विहासा (वैल्यूज़ इन हेल्थकेयर- ए स्प्रीचुअल एप्रोच)**। गहन शोध का ही नतीजा है कि आज विहासा प्रोग्राम मेडिकल प्रोफेशनल्स की जिंदगी बदल रहा है। वर्तमान में यह प्रोग्राम विश्वभर के 50 देशों में संचालित किया जा रहा है। वर्ष 2000 में संस्थान के विदेशी सेवाकेंद्रों की निदेशिका व पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के संकल्पों से विहासा प्रोग्राम को मूर्तरूप दिया गया।

वर्ष 2006 से भारत में हुआ शुरू

भारत में विहासा प्रोग्राम की शुरुआत वर्ष 2006 में संस्थान के मुख्यालय माउंट आबू, ज्ञान सरोवर परिसर से तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम और मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के द्वारा की गई थी। तब से लेकर भारतभर में वर्कशॉप और ट्रेनिंग आयोजित की जा रहीं हैं। वर्ष 2025 में भारतभर में विहासा के तहत 50 वर्कशॉप आयोजित की गईं। इस प्रोग्राम की बदौलत अब तक हजारों डॉक्टर्स और मेडिकल प्रोफेशनल्स को जीने की नई राह मिली है। विहासा एक एविडेंस बेस्ड प्रोग्राम है और यह साइंटिफिक रूप से प्रोफेशनल्स में बर्नआउट और स्ट्रेस कम करने के लिए चलाया जा रहा है।

एक ग्रुप में 20-25 प्रतिभागियों को ही करते हैं शामिल

विहासा माड्यूलर ट्रेनिंग प्रोग्राम के भारत में एसोसिएट को-ऑर्डिनेटर डॉ. सचिन परब ने बताया कि वर्कशॉप में डॉक्टर्स व अन्य प्रोफेशनल्स को सात चरणों में मेडिटेशन, हीलिंग पावर, थॉट्स पावर से लेकर बिहेवियर टेक्निक के बारे में बताया जाता है। एक ग्रुप में 20-25 प्रतिभागियों को ही शामिल किया जाता है। ट्रेनिंग में पढ़ाने वाले को फैसिलिटेटर बोलते हैं। फैसिलिटेटर अर्थात् किसी भी विषय को सरल करके पढ़ाना। यह प्रोग्राम टीम डवलपमेंट प्रोग्राम है। इसमें सभी अपने विचार व्यक्त करते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात इसमें प्रत्येक प्रतिभागी अपने जीवन के अनुभवों को सबके साथ सांझा करता है, ताकि उन अनुभवों का अन्य प्रतिभागियों को भी लाभ मिल सके। प्रत्येक मॉड्यूल में संबंधित विषय को व्यक्तिगत और व्यावसायिक दृष्टिकोण से गहराई से समझाया जाता है। प्रत्येक मॉड्यूल में कम से कम 4 से 8 घंटे का समय दिया जाता है।

देशभर की इन यूनिवर्सिटी के साथ साइन किया एमओयू

- **डीवाई पाटिल डीम्ड यूनिवर्सिटी, पुणे:** 8 अक्टूबर 2024
- **एमआईटी एडीटी यूनिवर्सिटी, पुणे:** 5 नवम्बर 2024
- **डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी का जिंदल नर्सिंग कॉलेज, पुणे:** 24 जनवरी 2025
- **डीवाई पाटिल डीम्ड यूनिवर्सिटी, कोल्हापुर:** 14 जून 2025
- **स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण एवं प्रशिक्षण केंद्र, महाराष्ट्र, औंध, पुणे:** 7 अगस्त 2025
- **भाऊसाहेब मुलाक नर्सिंग कॉलेज, नागपुर:** 5 सितम्बर 2025
- **इंस्टीट्यूट ऑफ हॉस्पिटेलिटी मैनेजमेंट, दादर, मुंबई:** 9 सितम्बर 2025
- **डीवाई पाटिल डीम्ड यूनिवर्सिटी, नेरुल, नवी मुंबई:** 15 सितम्बर 2025
- **आरए पोदार आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज, वर्ली, मुंबई:** 1 जनवरी 2026

पर्सनॉलिटी और लीडरशिप डवलपमेंट

इस प्रोग्राम में सबसे बड़ी बात प्रतिभागियों की पर्सनॉलिटी डवलप होती है। जीवन में हम कैसे छोटी-छोटी बातों में खुशी ढूंढ सकते हैं या खुश रह सकते हैं आदि बातों पर फोकस किया जाता है। ग्रुप डिस्कशन में आपसी अनुभवों को जानने, समझने का मौका मिलता है।

2000 में लंदन से की गई थी शुरुआत

2006 में भारत में माउंट आबू से हुई शुरुआत

50 देशों में विहासा प्रोग्राम संचालित

50 से अधिक वर्कशॉप भारत में 2025 में आयोजित की गईं

आप भी अपने शहर में करा सकते हैं विहासा वर्कशॉप

इसे ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग और कई यूनिवर्सिटी के बीच एमओयू साइन किए गए हैं। आप भी अपने शहर में विहासा वर्कशॉप करना चाहते हैं तो **डॉ. सचिन परब मो. 9892191942** से संपर्क कर सकते हैं।

एजुकेशन, इंजीनियरिंग और आईटी प्रोफेशनल्स भी जुड़े

विहासा प्रोग्राम के प्रभावी नतीजों को देखते हुए अब इसे मेडिकल के साथ एजुकेशन फील्ड, इंजीनियरिंग और आईटी प्रोफेशनल्स के लिए भी शुरु किया गया है। इसका लाभ हर क्षेत्र के प्रोफेशनल्स को मिल रहा है। जो लोग सुबह प्रोग्राम में मुरझाए चेहरों के साथ आते हैं, वह शाम को मुस्कुराते हुए जाते हैं।
- डॉ. प्रताप मिड्ढा, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़ (उपाध्यक्ष, मेडिकल विंग)

जानकी फाउंडेशन के तहत संचालित

विहासा प्रोग्राम की नींव लंदन में जानकी फाउंडेशन फॉर ग्लोबल हेल्थ केयर के तहत रखी गई थी। यह संगठन आध्यात्मिकता, सकारात्मक मानव विकास और समग्र व्यक्ति-केंद्रित स्वास्थ्य सेवा के लिए समर्पित है। विहासा के नतीजे बहुत ही प्रभावी हैं। इससे हजारों प्रोफेशनल्स को जीने की नई राह मिली है।
- डॉ. अशोक मेहता, राष्ट्रीय अध्यक्ष, विहासा प्रोग्राम (अध्यक्ष, मेडिकल विंग, ब्रह्माकुमारीज़) मुंबई

इन सात मॉड्यूल का दिया जाता है प्रशिक्षण

1. **मूल्य (Values):** मूल्य वह प्राणवायु हैं जिनके आधार पर जीवन की दशा और दिशा तय होती है। मूल्यों से ही हमारे व्यक्तित्व की पहचान होती है। ट्रेनिंग में प्रतिभागियों को मूल्यों के महत्व के बारे में प्रैक्टिकल जीवन के अनुभव शेयर किए जाते हैं। आंतरिक मूल्य और कार्यस्थल पर मूल्यों के महत्व के बारे में बताया जाता है।
2. **शांति (Peace):** शांति आत्मा का दिव्य गुण है। सभी शांति के साथ जीवन जीने की चाह रखते हैं। हर व्यक्ति को शांति पसंद होती है। व्यक्ति जीवनभर भागदौड़ करके पैसा कमाता है ताकि बुढ़ापे में वह सुख-शांति के साथ जीवन व्यतीत करे। वर्कशाप में सिखाया जाता है कि शांति तो हमारा निजी धर्म, गुण और संस्कार है। शांति से कार्य करने पर कार्यक्षमता बढ़ती है और तनावमुक्त भी रहते हैं।
3. **सकारात्मकता (Positivity):** विचार ही हमारे जीवन का निर्माण करते हैं। उतार-चढ़ाव, सुख-दुख, लाभ-हानि, यश-अपयश के बीच अपनी सोच को सकारात्मक बनाए रखना अपने आप में एक चुनौती और साधना है। जीवन के हर पहलु में सकारात्मक रहना एक कला है। तीसरे दिन प्रतिभागियों को सकारात्मक चिंतन की टेक्निक बताते हैं।
4. **करुणा (Compassion):** मेडिकल प्रोफेशनल्स में खासकर करुणा और दयाभाव का होना सबसे जरुरी है। जब तक एक डॉक्टर में करुणा का भाव नहीं होगा वह मरीज की तकलीफ और दर्द को महसूस नहीं कर सकता है। वर्कशॉप में प्रैक्टिकल में सिखाया जाता है कि कैसे मरीज के प्रति डॉक्टर का करुणामय और सहानुभूति पूर्ण व्यवहार उसके लिए हीलिंग पावर का काम करता है।
5. **सहयोग (Co-operation):** मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और सहयोग के बिना जीवन संभव नहीं है। लोगों को प्रोत्साहित और मोटिवेट करके उनमें छिपी प्रतिभा का सही उपयोग कर सकते हैं। प्रोग्राम के पांचवें दिन सहयोग का महत्व, कार्यस्थल पर आपसी सहयोग को बढ़ावा देने के टिप्स बताए जाते हैं। टीम लीडरशिप स्किल के टिप्स दिए जाते हैं।
6. **स्वयं का सम्मान (Valuing Yourself):** जब हम स्वयं का सम्मान करेंगे तभी दूसरे हमारा सम्मान करेंगे। इंसान के अंदर आत्म सम्मान होना जरुरी है। आध्यात्मिक ज्ञान के जरिए प्रतिभागियों को आत्म सम्मान बढ़ाने की कला का विकास किया जाता है। इसमें सिखाया जाता है कि सबसे पहले आप स्वयं के प्रति अच्छी फीलिंग करें, खुद की नजरों में खुद को आदर्श और महान व्यक्तित्व के रूप में देखें।
7. **हेल्थकेयर में आध्यात्मिकता:** व्यक्तिगत जीवन के साथ अपने कार्यस्थल पर आध्यात्मिक ज्ञान और समझ का कैसे उपयोग करना है, जीवन को आदर्श और मूल्यवान कैसे बनाना है आदि के बारे में इस अंतिम सत्र में बताया जाता है। मेडिटेशन और अध्यात्म के बारे में प्रशिक्षण दिया जाता है। जीवन आध्यात्मिक होगा तो मरीजों को हैंडल करना आसान होगा।

समाज सेवा प्रभाग : दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर भारत व नेपाल में चलाया गया था रक्तदान महाअभियान

रक्तदान अभियान को ओएमजी ने वर्ल्ड रिकॉर्ड में किया शामिल

- दो देशों में कुल 88,378 यूनिट रक्त किया गया एकत्रित

- अवार्ड समारोह में देशभर से आए 15,000 से अधिक लोग रहे उपस्थित

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के समाज सेवा प्रभाग द्वारा राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी की 18वीं पुण्यतिथि (विश्व बंधुत्व दिवस) के अवसर पर भारत एवं नेपाल में आयोजित विश्व बंधुत्व रक्तदान महाअभियान को ओएमजी बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा वर्ल्ड रिकॉर्ड के रूप में मान्यता प्रदान की गई है।

शांतिवन स्थित डायमंड हॉल में आयोजित भव्य अवार्ड समारोह में ओएमजी बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के प्रो. डॉ. दिनेश गुप्ता आनंदश्री एवं उनकी टीम द्वारा समाज सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके अवतार भाई, ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी एवं अन्य पदाधिकारियों को वर्ल्ड रिकॉर्ड का मेडल, मोमेंटो एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर देशभर से आए 15,000 से अधिक लोग उपस्थित रहे।

पांच पैरामीटर पर खरा उतरा अभियान-
प्रो. डॉ. दिनेश गुप्ता आनंदश्री ने बताया कि किसी भी वर्ल्ड रिकॉर्ड को मान्यता देने से पहले पांच प्रमुख पैरामीटर देखे जाते हैं। पहला रिकॉर्ड का समाज के लिए उपयोगी होना। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के समाज सेवा प्रभाग द्वारा 22 अगस्त से 25 अगस्त 2025 तक भारत एवं नेपाल में यह महाअभियान चलाया गया, जिसके अंतर्गत दोनों देशों में कुल 88,378 यूनिट रक्तदान हुआ। इस अभियान ने विश्व को यह संदेश दिया कि हम रक्त नहीं बना सकते, लेकिन रक्तदान के माध्यम से जीवन अवश्य बचा सकते हैं। दूसरा है- ऐसा रिकॉर्ड जिसे किसी अन्य देश या संस्था ने पहले न बनाया हो। अब तक किसी आध्यात्मिक एवं सामाजिक संस्था द्वारा इतने व्यापक स्तर पर रक्तदान अभियान संचालित नहीं किया गया। तीसरा है पूर्ण सुरक्षा मानकों का पालन। चौथा है रिकॉर्ड का यूनिक एवं नवाचार पूर्ण होना। पांचवां है किसी भी देश या संस्था की ओर से कोई आपत्ति न होना। इन सभी मानकों पर खरा उतरने के कारण ब्रह्माकुमारीज़ के समाज सेवा प्रभाग को यह वर्ल्ड रिकॉर्ड प्रदान किया गया।

सामाजिक एवं शासकीय संस्थाओं का रहा सहयोग-
प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके अवतार भाई ने बताया कि इस महाअभियान में भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, जिला ब्लड बैंक, जिला सरकारी अस्पताल, मेडिकल कॉलेज, रोटरी इंटरनेशनल, लायंस क्लब, आईएसबीटीआई सहित अनेक सामाजिक संगठनों का सहयोग प्राप्त हुआ था। यह ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के इतिहास में पहला अवसर था जब इतने बड़े स्तर पर रक्तदान अभियान आयोजित किया गया। ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया।

राष्ट्रीय शुभारंभ 17 अगस्त 2025 को ओआरसी में हुआ

समाज सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके बीरेंद्र भाई ने बताया कि इस रक्तदान महाअभियान का राष्ट्रीय शुभारंभ 17 अगस्त 2025 को गुरुग्राम स्थित ओआरसी में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा द्वारा किया गया था। इसके पश्चात 22 से 25 अगस्त 2025 तक भारत एवं नेपाल में हजारों रक्तदान शिविर आयोजित किए गए। शिविरों की मॉनिटरिंग गूगल मैप के माध्यम से की गई तथा प्रत्येक रक्तदाता का पंजीकरण किया गया। अभियान में एकत्रित रक्त को स्थानीय जिला अस्पताल के ब्लड बैंक में जमा किया गया।

ये भी रहे उपस्थित

अवार्ड समारोह के दौरान ओएमजी बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के डॉ. दिनेश गुप्ता आनंदश्री, चंद्रशेखर सरोज, गुरुग्राम ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी, अंबाबाड़ी से महिला प्रभाग की नेशनल को-ऑर्डिनेटर बीके शारदा दीदी, दिल्ली खानपुर से प्रभाग की जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके आशा दीदी, राजस्थान की एडिशनल जोनल कोऑर्डिनेटर बीके विजयलक्ष्मी दीदी, दिल्ली हरि नगर की रीजनल कोऑर्डिनेटर बीके सरिता दीदी सहित देशभर से आए 15,000 से अधिक लोग उपस्थित रहे।

उदयपुर में ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं के 50 वर्ष पूरे होने पर मनाई स्वर्ण जयंती

अनुशासन देखना हो तो माउंट आबू ब्रह्माकुमारीज़ में जाकर देखिए: राज्यपाल

शिव आमंत्रण, उदयपुर (राजस्थान)।

उदयपुर टाउन हॉल स्थित सुखड़ीआ रंगमंच में ब्रह्माकुमारीज़ की उदयपुर में सेवाओं की स्वर्ण जयंती बड़े ही हर्षोल्लास से मनाई गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने कहा की यहां के सभी भाई-बहने त्याग-तपस्या की मूर्ति हैं। अनुशासन देखना हो तो माउंट आबू ब्रह्माकुमारीज़ में जाकर देखिए।

राज्यपाल कटारिया ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था आगे भी अपनी सेवाओं द्वारा सभी को सुख-शांति का मार्गदर्शन कराती रहेगी। विधायक ताराचंद जैन ने भी संस्थान द्वारा की जा रहीं सामाजिक सेवाओं की सराहना की।

इस मौके पर जयपुर राजापार्क सबजोन की सभी वरिष्ठ राजयोगिनी दीदियों का सम्मान समारोह भी रखा गया। राजापार्क सबजोन की इंचार्ज राजयोगिनी पूनम दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनें समाज के हर वर्ग के लिए दिन-रात सेवा में तत्पर हैं। साथ ही आपने 50 वर्षों की सेवाओं के बारे में बताया। माउंट आबू पांडव भवन से पधारीं वरिष्ठ राजयोगिनी बीके शीलू दीदी ने सभी को एकता एवं विश्वास द्वारा विश्व शांति विषय पर अपना उद्बोधन दिया। मुख्यालय शांतिवन से डॉ. बीके सविता दीदी ने विश्व शांति के लिए योग कराया। इस मौके पर जोधपुर सेवाकेंद्र की संचालिका बीके शील दीदी, बीके फूल दीदी, सीकर की संचालिका बीके पुष्पा दीदी ने भी संबोधित किया। उदयपुर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके रीटा दीदी ने सभी को शुभकामनाएं दी एवं स्वागत किया। एक ब्रह्माकुमारी बहन का समर्पण समारोह भी आयोजित किया गया।

पेज 1 का शेष.....

इन सात बातों के आधार पर देते हैं ट्रेनिंग

1. मेडिटेशन : ध्यान का अर्थ है मौन रहकर अपने मन और विचारों को समझना। मौन के समय प्रतिभागी अपने भीतर झांकते हैं और यह सीखते हैं कि उनके विचार कैसे काम करते हैं।

2. कल्पना शक्ति : कल्पना का अर्थ है मन के द्वारा सकारात्मक चित्र बनाना (विजुलाइज करना)। इससे पुराने नकारात्मक अनुभवों, असफलता या निराशा से जुड़े भावों को दूर करने में मदद मिलती है और भविष्य के लिए लक्ष्य तय किए जा सकते हैं। यह अभ्यास आत्म-सम्मान और सकारात्मक सोच को मजबूत करता है।

3. आत्म-चिंतन : जीवन में पूर्व में घटी घटनाओं और अनुभव को याद करके उनका वर्तमान में हम लाभ कैसे ले सकते हैं, इस पर फोकस किया जाता है। जैसे डॉक्टर द्वारा किसी मरीज के इलाज में कोई प्रयोग किया हो और वह सफल रहा हो तो उसका भविष्य में कैसे उपयोग करना है आदि बातों पर फोकस किया जाता है। इसमें पिछले अनुभवों से सीखकर अपनी कमियों को समझा जाता है और कार्यशैली में सुधार किया जाता है।

4. सुनना : स्वास्थ्य सेवा में सुनने की कला बहुत आवश्यक है। डॉक्टर को यह बताया जाता है कि वह मरीज की बात को कैसे सुनें और क्यों सुनें। जब डॉक्टर मरीज की समस्या को अच्छे से सुनता है तो इसका उस पर सकारात्मक असर पड़ता है। आध्यात्मिक रूप से सुनना तभी संभव है जब हमारे भीतर शांति हो। तब हम बिना किसी पूर्वाग्रह के खुले हृदय से और पूरी एकाग्रता के साथ सुन सकते हैं।

5. सराहना : रोगियों की देखभाल, सहकर्मियों से संवाद और व्यक्तिगत जीवन में सराहना बहुत महत्वपूर्ण है। आध्यात्मिक रूप से यह गुण व्यक्ति और समूह की अच्छाइयों को पहचानता है, दोष खोजने के बजाय उनकी शक्तियों और मूल्यों के आधार पर समाधान ढूंढता है।

6. रचनात्मकता : इसमें पार्टिसिपेंट से अलग-अलग कई एक्टीविटी कराई जाती हैं, उनसे चित्र बनवाए जाते हैं। सबसे बड़ी बात बड़े-बड़े डॉक्टर, डीन पद-पोजीशन भूलकर बच्चों की तरह जमीन पर बैठकर चित्र बनाते हैं। जीवन में रचनात्मकता बहुत जरूरी है। इससे उमंग-उत्साह और जीवन जीने का आनंद आता है।

7. खेल भावना : खेल का अर्थ है सीखने की प्रक्रिया में आनंद और हंसी को शामिल करना। खेल भावना हमें सहज, मुक्त और निडर बनाती है। इससे हम बाधाओं को आसानी से पार कर पाते हैं। इससे सुनने में सहनशीलता और निर्णय लेने में सरलता आती है।

टोंक में ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित प्रभु स्मृति धाम समाज के नाम समर्पित

'प्रभु स्मृति धाम' मानव कल्याण के लिए बनेगा प्रकाश स्तंभ

शिव आमंत्रण, टोंक, राजस्थान।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के टोंक, सुभाष नगर में नवनिर्मित प्रभु स्मृति धाम भवन का भव्य उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया।

इसमें जयपुर सबजोन की निदेशिका राजयोगिनी बीके सुषमा दीदी ने कहा कि प्रभु स्मृति धाम मानव कल्याण की दिशा में एक सशक्त प्रकाश स्तंभ सिद्ध होगा। यहां से अनेक आत्माओं के जीवन में स्थायी सुख-शांति और खुशी का संचार होगा। यह धाम केवल ईंट-पत्थर से निर्मित भवन नहीं, बल्कि सैकड़ों श्रेष्ठ योगियों के पवित्र और दिव्य संकल्पों से साकार हुआ एक आध्यात्मिक तीर्थ है। उन्होंने टोंक में ईश्वरीय सेवाओं की शुरुआत से लेकर अब तक के सेवा कार्यों का सारगर्भित वर्णन किया।

जयपुर वैशाली नगर प्रभारी राजयोगिनी बीके चंद्रकला दीदी ने कहा कि सत्यता का तप हमारी श्रेष्ठ भावनाओं को दृढ़ करता है। प्रत्येक मानव के मन में ईश्वरीय प्रेम और पवित्रता की ज्योति प्रज्वलित कर सुख-शांति की दुनिया का निर्माण करना ही हमारा लक्ष्य है।

पूर्व सभापति लक्ष्मी जैन ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा निर्मित यह प्रभु स्मृति धाम शांति, सद्भाव और सकारात्मकता का प्रतीक बनेगा और समाज को नई दिशा प्रदान करेगा। संसार में रहते हुए ऐसे कार्य करने चाहिए, जिससे आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरणा मिलती रहे।

जर्मनी से पधारी सिस्टर पेट्रा ने कहा कि भारत एक पवित्र और महान देश है, जहां से संपूर्ण विश्व को आध्यात्मिक दिशा मिलती है। उन्होंने अपने राजयोगी जीवन के अनुभव सांझा करते हुए बताया कि 46 वर्ष पूर्व मुझे यह ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा प्राप्त हुई, तभी से में नियमित राजयोग का अभ्यास कर रही हैं। इससे न केवल हमारे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया, बल्कि मेरा जीवन ही आध्यात्मिक शक्ति से भरपूर हो गया है। मन में स्थिरता आई है तथा बुद्धि शुद्ध और पवित्र बनी है।

आत्मिक जागृति की ओर प्रेरित करेगा-

स्थानीय सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी अपर्णा दीदी ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रभु स्मृति धाम टोंक जिले के आध्यात्मिक इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ते हुए समाज को शांति, प्रेम और आत्मिक जागृति की ओर प्रेरित करेगा। इस दौरान रुक्मणि माता जी का 90वां तथा कमलेश बहन एवं लल्ली माता जी का 86वां जन्मोत्सव भी मनाया गया। अंत में सभी ने परमात्म स्मृति में तैयार ब्रह्मा भोजन ग्रहण किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ परमात्म ध्यान (राजयोग) से हुआ, जिससे संपूर्ण वातावरण दिव्यता और शांति से परिपूर्ण हो गया। इसके पश्चात फीता काटकर प्रभु स्मृति धाम का विधिवत उद्घाटन किया गया तथा दीप प्रज्वलन किया गया। नन्हीं कुमारियों द्वारा दी गई विभिन्न मनमोहक प्रस्तुतियों व नृत्य ने सभी का मन मोह लिया।

ये भी रहे मौजूद-

इस पावन अवसर पर देवली सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी निर्मल दीदी, चौथ का बरवाड़ा सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी बीना दीदी, टोडारायसिंह सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी पूनम दीदी, निवाई सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी रेखा दीदी, बनेठा सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी अनीता दीदी, ब्रह्माकुमारी सुनीता दीदी, ब्रह्माकुमारी गुंजन दीदी सहित जिले भर से संस्थान से जुड़े सैकड़ों सदस्य उपस्थित रहे।

बार्शी में सेवाओं के 50 साल पूरे, स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित

शिव आमंत्रण, बार्शी (महाराष्ट्र)। ब्रह्माकुमारीज़ की बार्शी में ईश्वरीय सेवाओं के 50 साल पूरे होने पर स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित किया गया। इस दौरान शिवाजी नगर, बार्शी में नवनिर्मित ब्रह्माकुमारीज़ राजयोग भवन का उद्घाटन भी किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में माउंट आबू से अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता राजयोगिनी बीके ऊषा दीदी पधारीं। सोलापुर उपक्षेत्र की संचालिका राजयोगिनी बीके सोमप्रभा दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान नगराध्यक्षा तेजस्विनीताई कथले, प्रशांत कथले, मधुसूदन चांडक, उदगीर की बीके महानंदा दीदी, इंडिया कॉलोनी अहमदाबाद की बीके भानू दीदी, गुजरात से बीके गीता दीदी, अहमदाबाद से बीके बाबूभाई, अंबाजोगाई सेवाकेंद्र की बीके सुनीता दीदी सहित आसपास के सेवाकेंद्रों से 1500 से अधिक भाई-बहनों ने भाग लिया।

'महामहिम दीदीजी मुर्मु' सर्वश्रेष्ठ भारतीय फीचर फिल्म के अवार्ड से सम्मानित

शिव आमंत्रण, आबू रोड। एमआईएफएफ इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में ब्रह्माकुमारीज़ के बैनर तले बनीं फिल्म महामहिम दीदीजी मुर्मु को विजेता घोषित किया गया है। फेस्टिवल में इस फिल्म को सर्वश्रेष्ठ भारतीय फीचर फिल्म, सर्वश्रेष्ठ जूरी पुरस्कार निर्देशक माउंट आबू के बीके पम्पोश मिश्रा को अवार्ड प्रदान किया गया। इसे नॉर्थ ईस्ट इंटरनेशनल डॉक्यूमेंट्री एंड फ़िल्म फेस्टिवल में भी सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार 13 दिसंबर 2025 को कला ऑडिटोरियम, ज्योति चित्रबन, गुवाहाटी में आयोजित समारोह में निर्देशक बीके पम्पोश मिश्रा को प्रमाण-पत्र एवं ट्रॉफी के रूप में प्रदान किया गया। महामहिम दीदीजी मुर्मु ने इसी वर्ष अपना 10वां अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया है। शांतिवन में यह अवार्ड अतिरिक्त महासचिव बीके मृत्युंजय भाई, बीके चक्रधारी दीदी ने बीके पम्पोश व बीके प्रभा बहन को प्रदान किया।

गीता का ज्ञान व्यवहार में कुशलता और सकारात्मक बदलाव लाता है

शिव आमंत्रण, बीदर, कर्नाटक।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सपना कन्वेंशन हॉल में गीता के आध्यात्मिक रहस्य विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इसमें माउंट आबू से पधारे राजयोगी बीके सुमंत भाई ने कहा कि श्रीमद्भगवत गीता जीवन जीने की कला सिखाती है। गीता में सर्व शास्त्रों का सार है। गीता को जिसने भी पढ़ा है उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव पाया है। गांधीजी ने भी जीवन में गीता का पथ अपनाया था। स्वामी विवेकानन्द ने भी गीता के रहस्यों को जीवन में उतारा था। गीता का ज्ञान व्यवहार में कुशलता लाता है। गीता के श्लोक आत्म बोध परमात्मा का सत्य परिचय, समय के ज्ञान के साथ-साथ श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी के माध्यम से पिछले आठ दशक से निराकार परमात्मा यह ज्ञान दे रहे हैं। इस ज्ञान को समझना है और हमें सच्चे अर्थ में जीवन सफल बनाना है। इसलिए गीता को सच्चे अर्थ में समझा जाए। गीता श्लोक में वर्णित कर्म सिद्धांत हमें सत्कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं। जीवन की विशालता का ज्ञान गीता ज्ञान में है। इस मौके पर बीके पार्वती बहन ने अतिथियों का स्वागत किया। रानी सत्यमूर्ति नाट्यश्री अकादमी के छात्रों ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया। बीके सुनंदा दीदी आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में 400 से अधिक भाई-बहनों ने भाग लिया।

ये भी रहे मौजूद-

इस अवसर पर राजयोगिनी राजऋषिवन रिट्रीट सेंटर बीदर की निदेशिका बीके सुमंगला दीदी, बीदर की संचालिका राजयोगिनी बीके सुनंदा दीदी, दत मंदिर संस्थान के पीठाधीश्वर जगन्नाथ महाराज, डीएचओ यादगीर डॉ. महेश बिरादर, सीएमसी पार्षद प्रभुशेट्टी, कुंभारवाड़ा, व्यवसायी प्रभु मैलागिरे, व्यवसायी संतोष पाटिल, निसर्ग वाटर के सहजानंद कांडगुले बीदर, सिविल इंजीनियर अमित भाई सहित बड़ी संख्या में गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

ब्रह्माकुमारीज हिसार : शिक्षकों के लिए रिट्रीट आयोजित

जीवन में सफलता से अधिक महत्वपूर्ण खुशी है

शिव आमंत्रण, हिसार, हरियाणा।

शिक्षा के क्षेत्र में आत्म सशक्तिकरण और समग्र विकास को समर्पित द इनर क्लासरूम रिट्रीट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस विशेष रिट्रीट में हिसार जिले के लगभग 150 विद्यालयों से आए 700 से अधिक शिक्षकों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. ई.वी. स्वामीनाथन ने दो प्रभावशाली व्याख्यान दिए "समग्र बुद्धि के माध्यम से प्रभावी शिक्षण" तथा "ध्यान का विज्ञान"। उन्होंने कहा कि एक प्रभावी शिक्षक वही होता है जो स्वयं निरंतर सीखने के लिए तत्पर रहता है और एक अच्छा कहानीकार भी होता है। शिक्षक को विद्यार्थियों की भावनात्मक नब्ज को समझने

की क्षमता होनी चाहिए। आज के बच्चों को असफलता को भी गरिमा के साथ स्वीकार करना सिखाया जाना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों से आग्रह किया कि वे विद्यार्थियों को यह समझाएं कि जीवन में सफलता से अधिक महत्वपूर्ण खुशी है। बच्चों के सशक्तिकरण पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि बच्चों के आईक्यू के साथ-साथ उन्हें भावनात्मक रूप से मजबूत बनाना भी अत्यंत आवश्यक है। हर कर्म में सफलता के लिए एकाग्रता की बहुत आवश्यकता होती है और बच्चों को यह बताना जरूरी है कि एकाग्रता कैसे बढ़ाई जाए। एकाग्रता बढ़ाने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग का निरंतर अभ्यास अत्यंत आवश्यक है। आध्यात्मिक ज्ञान से हम स्वयं को जान पाते हैं और राजयोग के अभ्यास से अपने मूल स्वरूप में स्थित हो पाते हैं। राजयोग हमें सामने वाले व्यक्ति की भावनात्मक और मानसिक स्थिति को समझने की क्षमता भी प्रदान करता है। इस अवसर पर सभी शिक्षकों को राजयोग का अभ्यास भी करवाया गया। हिसार की प्रभारी बीके रमेश कुमारी दीदी ने भी संबोधित किया।

शिव आमंत्रण, टोहाना, हरियाणा। युवा दिवस पर युवाओं के लिए स्वस्थ जीवनशैली विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें युवा प्रभाग की सक्रिय सदस्य एवं शिपिंग, विमानन तथा पर्यटन विभाग की पंजाब ज़ोनल कोऑर्डिनेटर बीके शैली दीदी(अम्बाला) ने अपने विचार व्यक्त किए। इस मौके पर डॉ. काजल अलावादी, युवा अग्रवाल सभा के प्रधान गौरव बंसल और सेवाकेंद्र से बीके वंदना दीदी भी मौजूद रहीं।

शिव आमंत्रण, अंबिकापुर, छग । स्वामी विवेकानंद के जन्म दिवस को युवा सप्ताह के अंतर्गत नशा मुक्ति, यातायात नियम एवं साइबर अपराध-कानूनी एवं सामाजिक पहलू पर जागरूकता अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान ब्रह्माकुमारी संचालिका बीके विद्या दीदी भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। इस दौरान सीएसपी राहुल बंसल, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण पुष्पमित्र मल्तियार, पूर्व प्राचार्य डॉ. एसके त्रिपाठी मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, सुंदरनगर, हिमाचल प्रदेश। ब्रह्माकुमारी केंद्र पर विश्व ध्यान दिवस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें सेवाकेंद्र की प्रभारी बीके शीला दीदी, सुंदरनगर प्रभारी बीके शिखा दीदी, मुख्यालय माउंट आबू से आए बीके हल्दर भाई ने योग का महत्व बताते हुए इसे जीवन में शामिल करने के बारे में बताया।

शिव आमंत्रण, झोझूकलां (हरियाणा)। राही एसोसिएशन व ब्रह्माकुमारीज़ के समाज सेवा प्रभाग द्वारा सांगवान अस्पताल में भारतीय सेना के लिए स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। बाढ़डा विधायक उमेद पातुवास ने अतिथि के रूप में शिरकत की। सेवाकेंद्र संचालिका बीके वसुधा दीदी व बीके ज्योति दीदी ने दिल्ली छावनी से सेना रक्त संग्रह टीम को ईश्वरीय सौगात प्रदान की।

सकारात्मक सोच और परमात्म स्मृति के साथ खेती करें किसान

शिव आमंत्रण, कामठी/महाराष्ट्र।

राष्ट्रीय किसान दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। सेवाकेंद्र संचालिका प्रेमलता दीदी ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि यौगिक खेती के माध्यम से बिना रसायन के, सकारात्मक संकल्प और पवित्र भावनाओं के साथ की गई खेती न केवल भूमि की उर्वरता बढ़ाती है, बल्कि मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रेमलता दीदी ने किसानों को आत्मिक शक्ति, सकारात्मक सोच और परमात्म स्मृति के साथ

खेती करने के लिए प्रेरित किया, जिससे कम लागत में अधिक एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन संभव हो सके। मौदा सेंटर की बीके अर्चना दीदी ने सभी को ध्यान कराया। रुची ऍग्रो फॉर्म गोंदिया के डायरेक्टर महेंद्र ठाकुर ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, रांची, झारखंड। राजभवन रांची में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से सेवाकेंद्र संचालिका बीके निर्मला दादी, बीके प्रदीप भाई और बीके इन्दू दीदी ने मुलाकात कर उन्हें संस्थान द्वारा की जा रहीं सेवाओं के बारे में बताया। साथ ही परमात्मा का स्मृति चिंह्न भेंट किया।

शिव आमंत्रण, मुंबई। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा ओवरथिंकिंग विषय पर सेमीनार आयोजित किया गया। इसमें बीके बिंदु दीदी ने कहा कि मेडिटेशन ऐसा नहीं कहता हैं कि सोचो ही नहीं। प्रेरक वक्ता बीके श्रेया दीदी ने भी ओवरथिंकिंग से बचने के उपाय बताए। मुख्य अतिथि तनुज महाशब्दे ने कहा कि मुझे यहां आकर अभी आधा घंटा ही हुआ हैं, लेकिन में बहुत कुछ सीख गया हूं। अत्यधिक विचार को हमें ना बोलना हैं, लेकिन वो कौन से अत्यधिक विचार हैं ये जानना बहुत महत्वपूर्ण हैं।

शिव आमंत्रण, आलीराजपुर, मप्र। गीता जयंती पर श्रीमद् भगवत गीता की बुकलेट का विमोचन करते हुए संत योगेश्वर शास्त्री, समाजसेवी सुधीर जैन, ब्रह्माकुमार नारायण भाई, कवियत्री संध्या पांडे, समाजसेवी भेरू सिंह, सेवाकेंद्र संचालिका ब्रह्माकुमारी माधुरी बहन, प्रो. सीताराम।

शिव आमंत्रण, लोधी रोड, दिल्ली । ब्रह्माकुमारीज़ लोधी रोड सेवाकेंद्र द्वारा दिल्ली सरकार के अनुभाग के अधिकारियों के लिए मूल्य एवं नैतिकता विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें सेवाकेंद्र संचालिका बीके गिरिजा दीदी ने जीवन में मूल्यों का महत्व बताते हुए अध्यात्म का महत्व बताया। साथ ही राजयोग मेडिटेशन से गहन शांति की अनुभूति कराई। प्रेरक वक्ता बीके पीयूष भाई ने भी उपरोक्त विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

शिव आमंत्रण, झालावाड़, राजस्थान। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा राजस्थान एसएमएस नर्सिंग कॉलेज में सेमीनार का आयोजन किया गया। इसमें बीके नेहा दीदी, बीके तपस्वी दीदी ने विद्यार्थियों को नशे की दुष्प्रभाव बताते हुए इससे मुक्त रहने की प्रतिज्ञा कराई। साथ ही जीवन में राजयोग मेडिटेशन के महत्व पर प्रकाश डाला। साथ ही राजयोग मेडिटेशन से सभी को शांति की गहन अनुभूति कराई। इस मौके पर डॉक्टर हिमांशु गोयल, कॉलेज डायरेक्टर नीरज अग्रवाल सहित विद्यार्थी मौजूद रहे।

चितईपुर का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास से मनाया

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में आने पर एक अलग आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव होता है : महापौर

शिव आमंत्रण, वाराणसी (उप्र)।

ब्रह्माकुमारीज़ के चितईपुर, गौतम नगर कॉलोनी स्थित सेवाकेंद्र का द्वितीय वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। इसमें मुख्य अतिथि वाराणसी महापौर अशोक कुमार तिवारी ने कहा कि हमारे लिए गौरव की बात है कि विश्वभर में फैले हुए ब्रह्माकुमारीज़ का उद्गम स्थल भारत और उसमें भी काशी ही है। ब्रह्माकुमारीज़ के साधना केंद्र में आने पर एक अलग आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव होता है। एक नवीन आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र है यह संस्था, यहां से हम सभी को लाभ लेना होगा।

पार्षद सुरेश पटेल ने संस्था के निस्वार्थ सेवाओं की सराहना करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के बीच आकर एक अलग अपनत्व का आभास होता है। हमें ब्रह्माकुमारी बहनों के त्याग, तपस्या और सेवाभाव से प्रेरणा लेनी होगी। हमारी शुभ-कामना है कि आपके मानव उत्थान का यह कार्य सदा सफलता की ओर बढ़ती रहा।

संस्था के क्षेत्रीय प्रबंधक राजयोगी बीके दीपेन्द्र ने कहा कि हमें अपने दिव्य कर्तव्यों से ही समाज और संसार परिवर्तन के निमित्त बनना होगा। उन्होंने संस्था के भाई-बहनों को द्वितीय वार्षिकोत्सव की बधाई दी। स्थानीय प्रभारी राजयोगिनी बीके सरोज दीदी ने कहा की मानव के आसुरी संस्कारों को परिवर्तन कर इस धरती पर स्वर्णिम युग की पुनर्स्थापना का परमात्म कार्य आप और हम सभी के सहयोग से ही संपन्न होना है।

संस्था के वरिष्ठ राजयोगी बीके पंकज भाई, भोजूबीर प्रभारी बीके वंदना दीदी, गौतमनगर कॉलोनी के प्रबुद्धजन यथा विभाष पाठक, अमित कुमार सिंह, आलोक कुमार सिंह, पीएन मिश्रा, एमके पांडे, आर पांडे, सभासद गोपाल जी, सभासद अतुल कुमार पांडे आदि ने भी अपनी शुभ-कामनाएं दी। अतिथियों के दीप प्रज्ज्वलन के साथ आरम्भ हुआ। संचालन बीके विपिन भाई ने किया। आभार ओएन उपाध्याय ने माना।

ये भी रहे मौजूद-
कार्यक्रम में बीके मधु बहन, बीके साधना बहन, बीके प्रीति बहन, बीके श्रेया बहन, बीके सौरभ भाई, बीके अभिनन्दन भाई, कपिल भाई, आशीष भाई, गंगाधर भाई, श्याम भाई, इरशाद भाई, महेंद्र भाई, रमेश भाई, अमित भाई, ज्योति बहन, नीमा बहन, नीलम बहन, कंचन बहन आदि का विशेष योगदान रहा।

राजयोग ध्यान से नशा छोड़ चुके विजयी योद्धाओं का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, जबलपुर/मप्र।

ब्रह्माकुमारीज़ के प्रेमनगर सेवाकेंद्र द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत राजयोग मेडिटेशन को अपनाकर व्यसन मुक्त बन चुके भाई-बहनों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें माउंट आबू से पधारे मेडिकल विंग के सचिव बीके डॉ. बनारसी लाल ने कहा कि नशा एक सामाजिक बुराई है। ब्रह्माकुमारीज़ में आज लाखों ऐसे भाई हैं जिन्होंने राजयोग मेडिटेशन और आध्यात्मिक ज्ञान से अपना जीवन आदर्श और मूल्यवान बनाया है। कार्यक्रम में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर के कुलगुरु राजेश वर्मा ने कहा कि हमें एक अच्छा समाज बनाना है तो लोगों को नशामुक्त होना पड़ेगा। इन्डियन मेडिकल एसोसिएशन की अध्यक्ष डॉ. ऋचा शर्मा, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस मेडिकल कॉलेज के अधीक्षक डॉ अरविन्द शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। जोनल इंचार्ज बीके हेमलता दीदी ने कहा कि पूरे जोन में नशामुक्त भारत अभियान चलाया जा रहा है। सेवाकेंद्र की निदेशिका बीके विमला दीदी, बीके विनीता दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

नशामुक्त रैली को एसपी ने दिखाई हरी झंडी

नशामुक्त समाज ही उन्नत राष्ट्र की नींव है

शिव आमंत्रण, नरसिंहपुर/मप्र।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा नए साल के पहले दिन नशामुक्त नरसिंहपुर के संकल्प के साथ भव्य जन-जागरण रैली निकाली गई। नगरपालिका चौराहे पर आयोजित कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक ऋषिकेश मीणा ने रैली को हरी झंडी दिखाते हुए कहा कि नशा मुक्त समाज ही उन्नत राष्ट्र की नींव है। नशा एक ऐसी बुराई है जो पीढ़ियों को नष्ट कर देती है। पुलिस 'ईगल क्लॉक' ऑपरेशन के माध्यम से नशे के विरुद्ध सख्त है और करोड़ों का गांजा व चरस जब्त कर चुकी है। एसपी ने सामाजिक संगठनों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि नशे के विरुद्ध जन-चेतना हर गली और मोहल्ले तक पहुंचनी चाहिए। रैली के पूर्व संस्थान के 'दिव्य संस्कार भवन' में नववर्ष का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यहां संस्थान के सभी भाई-बहनों ने आध्यात्मिक उमंग-उत्साह के साथ सभी ने समाज को व्यसन मुक्त बनाने का दृढ़ संकल्प लिया। रैली का नेतृत्व क्षेत्रीय संयोजिका बीके कुसुम दीदी ने किया। इस दौरान बीके प्रीति बहन, बीके सरोज दीदी बहन, बीके मुकेश भाई, वरिष्ठ समाजसेवी सुनील कोठारी एवं अजय नेमा ध्वज दिखाकर नशा मुक्त भारत अभियान रैली को रवाना करते हुए।

सार समाचार

महामंडलेश्वर पहुंचे ग्लोबल लाइट हाऊस

शिव आमंत्रण, सारनाथ, वाराणसी। हरिद्वार स्थित श्री मोहन जगदीश्वर आश्रम के महामण्डलेश्वर दिव्यानंद गिरि महाराज और स्वामी विवेकानंद गिरि महाराज अपनी मण्डली के साथ पूर्वी उ.प्र. और पश्चिम नेपाल के क्षेत्रीय मुख्यालय, ग्लोबल लाईट हाउस, सारनाथ में पहुंचकर संस्था के भाई-बहनों से स्नेह भरी मुलाकात की। साथ ही जीवनमूल्य आध्यात्मिक कला मंदिर का अवलोकन किया। इस दौरान संस्था के क्षेत्रीय प्रबंधक राजयोगी बीके दीपेंद्र भाई, बीके विपिन भाई, बीके राधिका बहन, बीके तापोशी बहन, बीके अनिता बहन, बीके मनिशा बहन ने संतों का स्वागत और अभिनंदन किया। इस दौरान महामण्डलेश्वर दिव्यानंद गिरि महाराज और स्वामी विवेकानंद महाराज ने संस्था के साथ अपने मधुर सम्बंध होने का जिक्र करते हुए काशी प्रवास पर खुशी जाहिर की। राजयोगी बीके दीपेंद्र ने संस्था की पूर्वी उ.प्र. में हो रही सेवाओं की जानकारी दी। साथ ही माउंट आबू पधारने का निमंत्रण भी दिया।

शिव आमंत्रण, इंदौर, मप्र । ब्रह्माकुमारीज़ के उप सेवाकेंद्र राजेंद्र नगर में युवा दिवस पर एक प्रेरणादायी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें बीके शशी दीदी ने युवाओं से आह्वान किया कि वे आंतरिक शक्ति, आत्मज्ञान एवं आत्मबल को जागृत कर जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए आध्यात्मिकता को अपनाएं। राजयोग मेडिटेशन के लिए प्रतिदिन कुछ समय अवश्य निकालना चाहिए, जिससे मानसिक शांति, एकाग्रता और आत्मविश्वास का विकास होता है। ओम भाई, संतोष बहन एवं बीके शारदा बहन स्वागत किया। संचालन बीके रक्षा दीदी ने किया। बीके यशवनी दीदी ने युवाओं को सकारात्मक जीवन मूल्यों की शपथ दिलाई। बीके अर्चना दीदी ने आभार माना।

शिव आमंत्रण, बिलासपुर, छग। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा सौ आदर्श युगलों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। मेरा उपहार मेरे बाबा को कार्यक्रम में परमात्मा शिव का ध्वज फहराया गया। सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी मंजू दीदी ने राजयोग के बारे में बताया। इस मौके पर व्यवसायी कैलाश अग्रवाल, आरएसएस के शरद बल्हाल, सुनील जायसवाल, शिंगू भाई, हैंड्स ग्रुप के प्रमुख अभिषेक विधानी, मंत्रालय के एडिशनल कलेक्टर हर्ष पाठक, वरिष्ठ अभियंता भूषण वर्मा, विद्युत विभाग के अधिकारी सहित बड़ी संख्या में भाई-बहन मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, लवकुशनगर (छतरपुर) मप्र। सनातन गौरव पद यात्रा में शामिल हुए दतिया के पंडोखर धाम सरकार के पंडित गुरुशरण शर्मा का नगर आगमन पर बहनों बीके सुलेखा बहन, बीके उषा बहन ने स्मृति चिंह प्रदान कर सम्मान किया। साथ ही संस्था के सेवा कार्यों से अवगत करते हुए माउंट आबू आने का दिया निमंत्रण।

संपादकीय

आत्मा से परमात्मा की मिलन-रात्रि

भारत की आध्यात्मिक परंपरा में महाशिवरात्रि का विशेष स्थान है। यह केवल एक पर्व नहीं, बल्कि आत्मा के जागरण और परमात्मा से मिलन की पावन रात्रि है। शिव का अर्थ है कल्याणकारी और रात्रि का अर्थ है अज्ञान का अंधकार। अर्थात् महाशिवरात्रि वह दिव्य अवसर है जब अज्ञान के अंधकार से निकलकर आत्मा, परमात्मा शिव के प्रकाश में प्रवेश करती है। सामान्य रूप से लोग इस पर्व को व्रत, जागरण और शिवलिंग पर जल-अभिषेक से जोड़ते हैं, परंतु इसका वास्तविक रहस्य इससे कहीं अधिक गहरा और आध्यात्मिक है। यह रात्रि आत्मा के भीतर छिपे हुए दिव्य गुणों- शांति, प्रेम, पवित्रता, शक्ति और ज्ञान को जागृत करने की रात्रि है। शिव कोई देहधारी नहीं, बल्कि परम पवित्र, निराकार, ज्योति स्वरूप परमात्मा हैं। वे आत्माओं को अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाने वाले परम शिक्षक हैं। वे स्वयं जन्म-मरण के चक्र से परे हैं और हमें भी इसी चक्र से मुक्त करने आते हैं। महाशिवरात्रि रात्रि इसलिए कहलाती है क्योंकि यह मानव आत्माओं के अज्ञान की अंतिम रात्रि का प्रतीक है। जब संसार में नैतिकता, पवित्रता और शांति का अभाव बढ़ जाता है, तब परमात्मा शिव अवतरित होकर ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। यह रात्रि आत्मा के जागरण की रात्रि है। जब आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानती है। इस पावन अवसर पर आत्मिक साधना, ध्यान और राजयोग का विशेष महत्व है। जब हम देह-अभिमान छोड़कर स्वयं को एक शुद्ध आत्मा के रूप में अनुभव करते हैं और परमात्मा शिव से जुड़ते हैं, तब आत्मा को शांति और शक्ति की अनुभूति होती है। यही सच्चा जागरण है।

शिवरात्रि का संदेश है- जागो आत्मा, परमात्मा आ चुके हैं। यह समय है अपने संस्कारों को पवित्र करने का, नकारात्मक सोच को छोड़ने का और सकारात्मक जीवन अपनाने का।

बोध कथा/जीवन की सीख

खुद की शक्तियां याद आईं

एक देश में एक बहुत शक्तिशाली हाथी था। वह हाथी इतना बलवान था कि उस देश के राजा ने उस हाथी के बलबूते पर बहुत सारे युद्ध जीते थे और एक दिन कई लड़ाइयां लड़ते-लड़ते वह हाथी बूढ़ा हो गया। अब वह शक्ति व सामथ्र्य उसमें नहीं रहा परंतु फिर भी राजा को वह बहुत बहुत प्रिय था और उस हाथी का जो महावत था वह भी बूढ़ा हो गया था और अब सेवानिवृत्त हो चुका था और एक दिन वह हाथी ऐसे ही वन में विहार करते करते एक कीचड़ में फंस गया और कीचड़ में अंदर धस्ता चला गया। सारे नगर निवासी एकत्र हुए। सबको पता था इस हाथी की महिमा का। सबको दुख हुआ कि कोई तो इस हाथी को बचाए। कई सारे सैनिक आए, लोग आए। सब ने बहुत प्रयत्न किए परंतु वह हाथी इतना बड़ा था और बीचो बीच फंस चुका था कैसे निकाले उस हाथी को? कईयों ने सोचा उसको तीर मारे जाए तो शायद उसकी वजह से वह बाहर निकल जाए परंतु उससे उसे और ही पीड़ा हुई और उसके शरीर से और ही रक्त बहा और वह वही रोता रहा। बात राजा तक पहुंची और राजा वहां उसे देखने आया उसे भी दुख हुआ कि कैसे हाथी को बाहर निकाले इस कीचड़ से इस दलदल से? सारे प्रयत्न हो चुके थे।

राजा को याद आई उस बूढ़े महावत की जो इस हाथी को पालता था और उसे बुलाया गया और उससे पूछा गया क्या करें, कैसे करें कैसे साथी को बाहर निकाले? उस बूढ़े महावत ने कहा मेरे पास एक योजना है,एक उपाय है ढेर सारे सैनिक बुलाए जाए जैसे किसी युद्ध की तैयारी की जाती है।

उस समय जैसे सारे सैनिक इक्कट्ठे किये जाते हैं वैसे ही सारे सैनिक आ जाए, ढोल नगाड़े बजाए जाए जैसे युद्ध के समय बजाए जाते हैं, शंख ध्वनि की जाती है वैसे शंख ध्वनि की जाए और इसके कहने अनुसार बहुत सारे सैनिक आ जाते हैं जैसे किसी युद्ध में जा रहे हैं। वैसा ही आवाज! अचानक वह हाथी जो दुखी है, रो रहा है, वह आवाज सुनता है और उसके जमाने की सारी यादें युद्ध कौशल याद आ जाता है और अचानक उसकी शक्ति फिर से जागृत हो जाती है। वही ऊर्जा फिर से आ जाती है। वहीं रणभूमि की आवाजें, तलवारों की आवाजें और एकदम से ऐसे बाहर आ जाता है जैसे बिना किसी मदद के। जैसे वह वहां फंसा ही नहीं था। ऐसा क्यों हुआ? क्या कहेंगे? उसे अपनी ताकत शायद भूल गई हो अब उसे याद आ गई और वह माहौल बन गया। जैसे ही माहौल बन गया अंदर की सुप्त चेतना जागृत हो गई।

सीख : हमें एक दूसरे की शक्तियों को उस हाथी के महावत और रामायण के जामवंत के तरह याद दिलाना चाहिए जिससे असंभव कार्य को भी संभव किया जा सकता है। तब उस हाथी और हनुमान की भांति निश्चित रूप से विजय पा सकते हैं।

मेरी कलम से

बी.के. रामसिंह,
रेवाड़ी (हरियाणा)

दिव्य गुणों का खजाना 'यथार्थता'

शिव आमंत्रण, आबू रोड। यथार्थता का नाम ही कर्म और उसका फल है अर्थात् व्यक्ति के लिए यह समझना जरूरी है कि हम जैसा कर्म करते हैं, फल भी वैसा ही मिलता है क्योंकि यह भी यथार्थ जीवन का एक अहम हिस्सा है। यथार्थ जीवन ही एक तपस्या है, तो साधना भी है, जिससे व्यक्ति का समय रुपी यज्ञ में, कर्म रूपी आहुतियां डालकर सफलता प्राप्त की जाती है। यथार्थवादी व्यक्ति उन सभी वस्तुओं को स्वीकार करता है, जो सत्य अर्थात् जन्म-मृत्यु का चक्र, जो कि जीवन का शाश्वत एक अटल सत्य है। यह एक ऐसी सच्चाई है जो वास्तविक परिस्थितियों और तथ्यों के अनुरूप है, न की भ्रम या कल्पना है। इसमें किसी भी प्रकार की बनावट अर्थात् मनगढ़ंत नहीं है। यथार्थवाद से तात्पर्य उस विचारधारा से है जो कि भौतिक जगत या वस्तु को सत्य मानती है। यथार्थ अर्थात् सत्यता, वास्तविकता, यह किसी चीज से सही या सटीक होने का गुण है। यथार्थता उस स्थिति का वर्णन करती है, जो वास्तव में मौजूद है या उन कही गई बातों के अनुरूप है अर्थात् माप लक्ष्य के संदर्भ से वास्तविक माप के करीब है। यथार्थता सत्य होने या सही होने के गुण को बताती है, जिससे किसी अवलोकन में त्रुटि की कमी होती है।

जो कुछ आज आपके हाथ में है, वह कल नहीं रहेगा: कहा जाता है कि जीवन का सत्य मनुष्य के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है, परन्तु इसके कुछ और भी पहलू है जो अन्य सभी पर लागू होते हैं, अर्थात् एक संसार में हर वस्तु नश्वर, परिवर्तनशील, जन्म-मृत्यु, संतोष, सुख-दुःख, हानि-लाभ, संघर्ष आदि का मिश्रण होता है। ब्रह्मांड मनुष्य और प्रकृति सहित सब कुछ निरंतर बदलते ही रहा रहता है और एक दिन ऐसा भी आता है कि सब खत्म भी हो जाता है। जो कुछ आज आपके हाथ में है, वह कल नहीं रहेगा। हर व्यक्ति इन सभी को स्वीकार करके, कृतज्ञता, व्यक्ति-प्रेम और श्रेष्ठ-कर्मों से भरा जीवन जी सकता है और खुश रह सकता है।

वास्तविकता यह है कि जीवन नश्वर है: जीवन की यथार्थता है- निश्चिंत्यता, नश्वरता और संघर्षों से भरी है लेकिन इसमें चेतना, संबंध और अर्थपूर्ण भी शामिल है। वास्तविकता यह है कि जीवन नश्वर है और इसे अपने भीतर के सत्य और उद्देश्य को पहचानते हुए जीना चाहिए। इससे अपने ज्ञान, ज्ञानार्जन और अनुभवों के माध्यम से जीना और दुनिया को कुछ देना भी शामिल है। जीवन स्वाभाविक रूप से कठिन है यानी सफलता आसानी से नहीं मिलती है और हर किसी को जीवन में संघर्ष और चुनौतियों का सामना करना ही पड़ता है। सच्चाई और ईमानदारी की भावना यथार्थवादी व्यक्ति में प्रबल होती है। वह व्यक्ति जो कुछ भी करता है या कहता है, वह एक वास्तविकता के अनुरूप होती है अर्थात् यथार्थ व्यक्ति वही होता है, जो पूरे समाज व मानवता का आदर सत्कार करता है। लेकिन किसी भी व्यक्ति आम या खास चाहे वह गरीब हो या असक्षम या बुद्धिहीन हो, अपेक्षा का पात्र नहीं समझता।

जिज्ञासु प्रवृति की आंतरिक उत्कंठा से स्वाध्याय सत्य

जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 91

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशतनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

शिव आमंत्रण, आबू रोड। आत्मानुभूति की व्यावहारिक पृष्ठभूमि सदैव मानवीय संवेदनाओं के सत्य स्वरूप को सम्पूर्ण श्रद्धा के साथ आत्मसात करती है जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व, कृतित्व और अस्तित्व में परिमार्जन से आरम्भ हुई सात्विक प्रक्रिया चेतना के सम्पूर्ण परिष्कार के संदर्भ एवं प्रसंग की उच्चतम अवस्था तक स्वयं को स्थापित कर लेती है। जीवन की गतिशील प्रक्रिया में आत्मिक सुखान्त का आत्मानुभूति से सम्बद्ध पक्ष आत्म तत्व के प्रति सजग रहकर जब स्वाध्याय में संलग्न होता है तब आत्मा का परमात्मा से रहस्यपूर्ण आधारभूत सम्बन्ध परमात्मानुभूति के विराट स्वरूप में मानव जीवन की अमूल्य धरोहर बन जाता है।

नैसर्गिक अभिप्रेरणा द्वारा जिज्ञासु प्रवृति-

जीवात्मा का जागृत स्वरूप नैसर्गिक अभिप्रेरणा का मूलभूत स्त्रोत होता है जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व में जिज्ञासु प्रवृत्ति की निरन्तर अभिवृद्धि होती है तथा इस आन्तरिक उत्कण्ठा के माध्यम से ही स्वाध्याय की ओर अनुराग उत्पन्न होता है जो आत्मगत सत्यता की वास्तविकता को अन्ततः प्रकट कर देता है। आत्मिक चेतना के द्वारा विकसित मन, बुद्धि एवं संस्कार का परिमार्जित, स्वरूप ही सम्पूर्ण जीवात्मा की आन्तरिक शक्ति और संतुष्टि का आधार है जिससे जीवन की लौकिक, अलौकिक एवं पारलौकिक सम्बन्धों की संरचना लोक व्यवहार में प्रतिपादित हो पाती है तथा कर्मों की गुह्य गति स्वीकारोक्ति के स्वरूप में पूर्णतः परिवर्तित हो

जाती है। नैसर्गिक अभिप्रेरणा अन्तर्मन की शक्तियों को गुणग्राही स्वरूप में रूपान्तरित कर देती है और चेतना द्वारा पूर्ण मनोयोग से अति सूक्ष्म पक्षों में मनःस्थिति को स्थिरता प्रदान करके अनुभवी बनने का यथार्थवादी दृष्टिकोण नियमित रूप से कार्यरत रहता है जो समयानुसार श्रेष्ठतम के अनुकरण में निष्ठावान बन जाता है ।

जीवन में समझना और सीखना जब विधिवत तरीके से सम्पन्न होता है तब आत्मिक अनुभूति व्यक्तित्व निर्माण का कारण बन जाती है और व्यक्ति के लिए आत्मगत पुरुषार्थ में परमात्म स्मृति के द्वारा स्वयं की स्थिति को निर्मित करने में सहायता प्राप्त हो जाती है जिससे आत्मा की उच्चतम अवस्था के साथ पवित्र स्वरूप का निर्माण संभव हो जाता है ।

स्व कल्याण हेतु आत्मिक परिष्कार की नैसर्गिक अभिप्रेरणा आत्म चिन्तन द्वारा आत्मिक हित के साथ सर्व आत्माओं के हितार्थ का मुख्य केन्द्र बन जाता है जिसमे जीवन पर्यन्त आत्मगत जिज्ञासु प्रवृत्ति से नव चेतना, चहुँ दिशाओं से श्रेष्ठतम और पवित्रतम को स्वीकार करके इसी जीवन में जीवात्मा महानतम शिखर पर स्वयं को स्थापित करके सर्व आत्मन बन्धुओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन जाती है ।

पवित्रतम अभिलाषा हेतु आंतरिक उत्कंठा

मानवीय मूल्य के प्रति नैसर्गिक आकर्षण जीवन के सूक्ष्म स्वरूप में सदैव स्वयं की चैतन्यता को ढूंढ़ने हेतु प्रयासरत रहता है जिसमें आत्मिक चेतना के गुणों एवं शक्तियों का जीवंत विश्लेषण समाहित होता है जो जीवन की उपयोगिता को विविध संदर्भ और प्रसंग में अर्थपूर्ण स्थितियों के लिए मानव जाति को महत्वपूर्ण बना देता है । सम्पूर्ण जीवन काल में दीर्घकालीन स्थितियों के अन्तर्गत जीवन की सत्यता पवित्र अभिलाषा से सम्बद्ध रहती है जिसकी स्वीकारोक्ति अन्तर्मुखी अवस्था में विद्यमान होने के कारण स्वयं का चेतनागत मूल्यांकन निष्पक्षता की प्रासंगिकता के वास्तविक परिवेश में केवल एकांगी चिंतन का पर्याय बनने से उन्मुक्त परिदृश्य में भी विशुद्ध आन्तरिक उत्कण्ठा के सानिध्य में गतिशील होकर अन्तत : प्रतीक्षारत रहता है । पवित्र अभिलाषा की पूर्णता में तीव्र पुरुषार्थ से जुड़ी जिज्ञासु प्रवृत्ति की आन्तरिक उत्कण्ठा जब स्वाध्याय के आनंद में समाविष्ठ होती है तब सत्य का स्वरूप आत्मज्ञान की बोधगम्यता द्वारा प्रस्फुटित होता है जिसमें आत्मिक समृद्धि की अनुभूति के विविध आयाम धन्यता के परिवेश में सम्पूर्ण रूप से आहलादित हो जाते हैं। चेतना की नैसर्गिक पृष्ठभूमि जीवात्मा की मूलभूत प्रवृत्ति को संचालित करती है जिसका संतुष्टिगत स्वरूप सम्पूर्ण व्यक्तित्व को जीवन की समस्त पवित्र अभिलाषाओं से जोड़ देता है जिसमे चेतना द्वारा अत्यन्त सूक्ष्मता से नैसर्गिक रूप में आत्म तत्व के स्वमान, स्वरूप एवं स्वभाव की अनुभूतिगत खोज आरम्भ हो जाती है जो जीवन पर्यन्त जारी रहती है। अंतर्मन से परम सत्ता के सम्मुख सम्पूर्ण समर्पण का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक स्वरूप आत्मानुभूति की पवित्र अभिलाषा हेतु आन्तरिक उत्कण्ठा का सात्विक परिणाम है जिसकी पवित्रता की विराटता आत्मगत चेतना के अनादि स्वरूप में सदा विद्यमान रहती है जो जीवात्मा के परिवेश में अनवरत पुरुषार्थ में संलग्न साधक को साधना के प्रतिफल स्वरूप परम सौभाग्य से प्राप्त होती है ।

'यदि कोई युवा मातृभूमि की सेवा नहीं करता है तो उसका जीवन व्यर्थ है'

चंद्रशेखर आजाद, स्वतंत्रता सेनानी

व्यक्ति छोटा या बड़ा अपने जन्म के कारण नहीं बल्कि कर्म के कारण होता है।

- संत रविदास, कवि, संत

माउंट आबू से आई नशा मुक्ति वैन का जालंधर में मुख्यमंत्री ने किया उद्घाटन

शिव आमंत्रण, जालंधर/पंजाब।

नशामुक्त समाज को बढ़ावा देने की दिशा में एक सराहनीय कदम उठाते हुए माउंट आबू से प्रसिद्ध 'नशा मुक्ति वैन' (व्यसन मुक्ति जागरूकता प्रदर्शनी) पंजाब पहुंची। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान एवं आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल द्वारा इसका औपचारिक उद्घाटन किया गया। समारोह जालंधर की लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी में आयोजित किया गया।

मुख्यमंत्री भगवंत मान ने सामाजिक उत्थान में निरंतर योगदान देने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ की सराहना की। उन्होंने कहा कि नशामुक्ति के लिए मानसिक सशक्तिकरण, नैतिक मार्गदर्शन और आध्यात्मिक शिक्षा की भी आवश्यकता है। ऐसी पहल समाज में आशा और सकारात्मकता पैदा करती है।

माउंट आबू से आए राजयोगी बीके डॉ. बनारसी भाई, पंजाब ज़ोन की प्रभारी राजयोगिनी बीके प्रेम दीदी, लुधियाना सब-ज़ोन की प्रभारी राजयोगिनी बीके सरस्वती दीदी, आदर्श नगर जालंधर सेवाकेंद्र की प्रभारी राजयोगिनी बीके संधीरा दीदी ने शिव ध्वज दिखाकर नशामुक्ति वैन को रवाना किया।

इस अवसर पर एलपीयू के प्रमुख, छात्र, गणमान्य अतिथि, अधिकारी, समाजसेवी और एक स्वस्थ एवं सशक्त पंजाब के निर्माण के लिए समर्पित सैकड़ों नागरिक उपस्थित थे। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की एक पहल' नशा मुक्ति वैन'पूरे भारत की यात्रा करती है। इसमें एक अनूठी ऑडियो-विजुअल और संवादात्मक प्रदर्शनी है जो नशीली दवाओं, तंबाकू और शराब के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता फैलाती है। यह आंतरिक शक्ति और नशा मुक्ति के लिए आध्यात्मिक तकनीकों, जीवनशैली में बदलाव और राजयोग मेडिटेशन को शक्तिशाली उपकरणों के रूप में रेखांकित करती है।

सम्मान से बढ़े बुजुर्गों की शान, यही है भारत की सच्ची पहचान

शिव आमंत्रण, अंबाला, पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ सुप्रीम लाइट हाउस जग्गी कॉलोनी अंबाला में संगम प्रोजेक्ट के अंतर्गत कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का नारा रहा 'सम्मान से बढ़े बुजुर्गों की शान, यही है भारत की सच्ची पहचान'। संचालिका बीके दिव्या दीदी ने बताया कि संस्थान के समाज सेवा प्रभाग द्वारा वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण हेतु 'संगमः गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन' नामक एक राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया जाएगा। वरिष्ठ नागरिक अतीत से जुड़ने की कड़ी हैं और भविष्य के मार्गदर्शक भी हैं, हमें उनके मार्गदर्शन को महत्व देना चाहिए और उनकी बहुमूल्य संगति का आनंद लेना चाहिए। शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ की

दुर्ग में वाह जिंदगी वाह शिविर का आयोजन

मुस्कुराना स्ट्रैस की सबसे बड़ी एंटीडोज है

शिव आमंत्रण, दुर्ग, छग।

ब्रह्माकुमारीज़ के 'आनंद सरोवर' बघेरा, दुर्ग के कमला दीदी सभागार में वाह जिंदगी वाह' शिविर का आयोजन किया गया। इसमें प्रख्यात प्रेरक वक्ता प्रोफेसर ईवी गिरीश ने कहा कि तनाव को कम करने के लिए मुस्कुराना सबसे बड़ी रामबाण दवा है। स्ट्रैस की सबसे बड़ी एंटीडोज है। ईश्वर ने सभी प्राणियों में, पशु - पक्षियों में मुस्कुराने की कला केवल मनुष्य को दिया है, इसलिए हम हमेशा मुस्कुराते रहें। आपने मुस्कुराने के लिए लोगों को एक एक्सरसाइज भी कराए। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो मुस्कुराकर खुद भी खुश रह सकता है और औरों को भी खुशी दे सकता है। एक वैज्ञानिक तथ्य है कि 1 साल का बच्चा 24 घंटे में लगभग 300 बार मुस्कुराता है। हम जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं हमारी मुस्कुराहट कम होती जाती है। आपने

भीड़ से पूछा कि आप लोग दिनभर में कितने बार मुस्कुराते हैं तो किसी ने जवाब दिया 5 से 10 बार। हमें अपने आप से पूछना चाहिए कि हमारी जिंदगी मुस्कुराने के मामले में पहले से बेहतर हुआ है या बदत्तर हुआ है। तनाव का लेन देन हमेशा मानसिक, शारीरिक, व्यवहारिक, पारिवारिक समस्या को क्रिएट ही करता है। दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने तनाव के कारणों को जानने का प्रयास किया और उन्होंने आठ ब्राड क्लासिफिकेशन बनाएं, जिसके कारण से लोगों को तनाव होता है। दुर्ग कलेक्टर अभिजीत सिंह शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि मुझे पहली बार ब्रह्माकुमारीज में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

शासकीय अधिकारियों के लिए वर्कशॉप आयोजित

प्रशासनिक अधिकारियों को मिला आंतरिक सशक्तिकरण का मंत्र

शिव आमंत्रण, नवा रायपुर, छग।

ब्रह्माकुमारीज़ मुम्बई की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके श्रेया दीदी ने कहा कि अपने हर विचार के लिए हम स्वयं जिम्मेदार होते हैं। मन की शान्ति के लिए जरूरी है कि हम सही सोचें। डॉक्टर्स का कहना है कि शरीर की हर बिमारी का मूल कारण हमारी मानसिक अवस्था में छिपा हुआ है। इसलिए किसी बात को मन में दबाकर न रखें। उसे किसी के आगे बतलाकर हल्के हो जाएं।

वह ब्रह्माकुमारीज के प्रशासनिक सेवा प्रभाग द्वारा छत्तीसगढ़ प्रशासन अकादमी निमोरा में शासकीय अधिकारियों के लिए आयोजित वर्कशाप में अपने विचार व्यक्त कर रही थीं। विषय था- प्रशासनिक अधिकारियों में आवश्यक व्यक्तिगत कौशल।

उन्होंने ने कहा कि जैसा हमारा चिंतन होगा, वैसा ही हमारा चरित्र और जीवन बनेगा। सकारात्मक दृष्टिकोण ही सफलता की असली कुंजी है। वर्तमान समय में बाहरी चुनौतियों से अधिक आंतरिक स्थिति को मजबूत करने की आवश्यकता है। जब हम अपने मन को नियंत्रित कर लेते हैं, तो बाहरी परिस्थितियाँ स्वतः ही हमारे अनुकूल होने लगती हैं। हमारा मन कमजोर होगा तो छोटी-छोटी समस्याएं भी पहाड़ जैसी महसूस होगी। कार्यक्षमता और निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिए मेडिटेशन द्वारा आत्मबल को बढ़ाने और उसे मजबूत करने की आवश्यकता है। कार्यस्थल पर बढ़ता दबाव और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाना तभी संभव है जब हम प्रतिदिन स्वयं के लिए समय निकालकर मेडिटेशन करेंगे। यदि शासन-प्रशासन में बैठे लोग मानसिक रूप से शांत और प्रसन्न रहेंगे, तो उनकी कार्यक्षमता में न केवल वृद्धि होगी बल्कि समाज को भी एक बेहतर नेतृत्व मिलेगा। हमारा मन एक उपजाऊ भूमि की तरह है। इसमें हम जैसे विचार बोएंगे, वैसी ही फसल काटेंगे। प्रशासन अकादमी के संचालक टीसी महावर ने ब्रह्माकुमारी बहनों का स्वागत किया। इस मौके पर बीके रश्मि दीदी व भाई-बहनें भी मौजूद रहे।

हरिद्वार में विचार सम्मेलन आयोजित

ब्रह्माकुमारीज़ में आकर मुझे सुखद अनुभूति होती है: राज्य मंत्री सैनी

शिव आमंत्रण, हरिद्वार/उत्तराखंड

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर हरिद्वार कुम्भ मेला 2027 के सफल आयोजन हेतु विचार सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें राज्य मंत्री श्यामवीर सैनी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में आकर उन्हें सुखद अनुभूति होती है। ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय माउंट आबू से जुड़े अपने अनुभव भी सांझा किए और कुंभ में ब्रह्माकुमारीज के योगदान को प्रासंगिक बताया। गुरु गोरक्षनाथ आश्रम के पीठाधीश्वर महंत योगी सागरनाथ ने कहा कि उन्हें ब्रह्माकुमारीज आकर बहुत अच्छा लगता है। दुनिया में यह एक मात्र ऐसी संस्था है जो शांति व सद्भाव की संवाहक है। उन्होंने सभी को नववर्ष पर अच्छे कार्य करने का संकल्प लेने की भी बात कही।

राजयोगिनी बीके मंजू दीदी ने कहा कि नववर्ष को नए सद-संकल्पों का अवसर बताया। आने वाले कुंभ व ब्रह्माकुमारीज संस्था की स्थापना के 90 वर्ष होने के उपलक्ष्य में वर्ष भर चलने वाले नवदशकोत्सव में सभी भाई बहनों की सक्रिय भूमिका रहनी चाहिए। राजयोगिनी बीके मीना दीदी ने भी नववर्ष के इस आयोजन को समसामयिक बताया। उन्होंने कुंभ के आयोजन की तैयारी में सार्थक योगदान की भी बात कही।

विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ के उपकुलपति डॉ. श्रीगोपाल नारसन ने ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े अपने अनुभव सांझा किए और कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा नियमित कराया जा रहा राजयोग अभ्यास ही वास्तविक कुंभ है क्योंकि मां गंगा में स्नान करके हमारा तन शुद्ध हो सकता है, लेकिन मन राजयोग के माध्यम से परमात्म मिलन द्वारा ही शुद्ध हो सकता है। उन्होंने अपनी नववर्ष कविता के माध्यम से जीवन में बदलाव लाने की भी बात कही। बिंदेश्वरी टम्टा ने भी ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने के बाद के अपने जीवन में आए बदलाव को रेखांकित किया। बीके सुशील भाई के संचालन में अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन द्वारा शुभारंभ किया।

रावतभाटा में मीडिया सेमीनार एवं सम्मान समारोह आयोजित

सकारात्मक एवं जिम्मेदार पत्रकारिता से समाज में आपसी सद्भाव, विश्वास और एकता को मजबूती मिलती है: बीके कोमल

शिव आमंत्रण, रावतभाटा, राजस्थान।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर की ओर से मीडिया सेमीनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में शांति, एकता और विश्वास के मूल्यों को सशक्त करते हुए पत्रकारिता को प्रोत्साहित करना रहा।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता माउंट आबू से पधारे मधुबन न्यूज़ के एडिटर-इन-चीफ एवं संस्थान के पीआरओ ब्रह्माकुमार कोमल भाई ने कहा कि मीडिया समाज में शांति, एकता और विश्वास की भावना को जागृत करने का सशक्त माध्यम है। सकारात्मक एवं जिम्मेदार पत्रकारिता से समाज में आपसी सद्भाव, विश्वास और एकता को मजबूती मिलती है। रावतभाटा सेंटर की इंचार्ज बीके अंकिता दीदी ने कहा कि आंतरिक शांति से ही बाहरी शांति संभव है और मीडिया इसमें सेतु की भूमिका निभा सकता है। चित्तौड़गढ़ प्रतापनगर सेंटर की इंचार्ज बीके आशा दीदी भी उपस्थित रहीं। सभी पत्रकार बंधुओं ने सक्रिय सहभागिता करते हुए कार्यक्रम की सराहना की और इसे समाज में शांति, एकता एवं विश्वास को बढ़ावा देने वाला प्रेरणादायक आयोजन बताया। अतिथि के रूप में सुखवाल समाज के अध्यक्ष एसडी वैष्णव सुखवाल, सीए डॉ. अर्जुन मुंद्रा, अर्बन बैंक की एमडी वंदना विजरानी उपस्थित रहीं। संचालन ब्रह्माकुमारी प्रीति बहन ने किया। संस्था का परिचय देते हुए ब्रह्माकुमारी लवीना बहन ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा समाज में शांति, नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार के कार्यों पर प्रकाश डाला गया। अतिथियों एवं पत्रकार बंधुओं का आत्मीय स्वागत ब्रह्माकुमारी कविता बहन ने किया। कार्यक्रम का आयोजन ब्रह्माकुमारीज़ गांधीनगर केंद्र की ओर से किया गया, जो सौहार्दपूर्ण, सकारात्मक एवं प्रेरणादायक वातावरण में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

मथुरा रिफाइनरी में सिखाए हर हाल में खुशहाल के सूत्र

मथुरा, उप्र। मथुरा रिफाइनरी कर्मचारी क्लब में ब्रह्माकुमारीज़ के अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता बीके भारत भूषण भाई का एक प्रभावशाली एवं प्रेरणादायक कार्यक्रम आयोजित किया गया। बीके भारत भूषण भाई ने हर हाल में खुशहाल विषय पर मथुरा रिफाइनरी के कर्मचारियों को संबोधित 7- पी का मंत्र दिया। जिसे अपनाकर व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में सकारात्मक, संतुलित एवं खुशहाल जीवन जी सकता है। सात पी है-पॉजिटिविटी, पैशन्स,पोलाइटनेस,प्रेज, पर्पज ऑफ़ लाइफ,प्रैक्टिकल, प्रैक्टिस मैडिटेशन. उनका उद्बोधन कर्मचारियों के लिए अत्यंत प्रेरणास्पद एवं उपयोगी सिद्ध हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं स्वागत नृत्य से हुआ। उद्घाटन संबोधन सीजीएम (टी) एच एस रुखियार द्वारा दिया गया। रिफाइनरी नगर सेवा केंद्र प्रभारी राजयोगिनी बीके कृष्णा दीदी ने सभी को राजयोग ध्यान का गहन अनुभव कराया। कार्यक्रम के अंत में जीएम (ट्रेनिंग) श्री डी. सी. वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर जीएम (एचआर) के. गोपीनाथ, जीएम (ईएस) कौशलेंद्र कुमार, जीएम (पीएसएम) अभिनव गोस्वामी आदि मौजूद रहे।

यौगिक खेती और प्राकृतिक खेती अपनाएं किसान: बीके सुमंत

शिव आमंत्रण, बीदर, कर्नाटक।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा राष्ट्रीय किसान दिवस पर रामपुरे कॉलोनी सेवाकेंद्र द्वारा कृषि विभाग एवं कृषक समाज के सहयोग से शाश्वत यौगिक खेती एवं प्राकृतिक खेती विषय पर विशेष सत्र का आयोजन किया गया। इसके पूर्व सुबह शहर के मुख्य मार्ग पर किसान जन जगृति मोटर साइकिल रैली निकाली गई।

शहर के सपना कंवेंशन् हॉल में आयोजित इस कार्यक्रम में बीदर जिले के 7 उन्नत किसानों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों का तिलक, पुष्पगुच्छ, शॉल देकर स्वागत किया गया। नाट्य श्री अकादमी के छात्रों द्वारा स्वागत नृत्य प्रस्तुति दी गई। पौधों को जल अर्पित कर कार्यक्रम का आगाज् हुआ। कार्यक्रम में मुख्य रूप से राजयोगी बीके सुमंत भाई, मुख्यालय संयोजक कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग, राजयोगिनी सुमंगला दीदी डायरेक्टर राजऋषिवन, राजयोगी सुनंदा दीदी संचालिका शिव शक्ति भवन बीदर, कलेक्टर शिल्पा शर्मा, आईएफएस डीएफओ आशीष रेड्डी, सिस्टर देविका, पूर्व जिला परिषद् शिक्षा सभापति, पूर्व विधायक गंगाराम सौदागर सहित बड़ी संख्या में किसान मौजूद रहे। मुख्य वक्ता राजयोगी सुमंत भाई ने कहा कि सच्चा किसान वो जो माँ भारती की पोषण करे, न कि शोषण करें। किसान सबका अन्नदाता है। सभी व्यवसायों मे उत्तम हैं खेती। आज आवश्यकता है शाश्वत यौगिक प्राकृतिक खेती की। राजयोग से हमारे किसान भाई-बहनें चमत्कारी परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए प्राकृतिक खेती अपनाएं।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, इंफाल। इंफाल में ब्रह्माकुमारीज़ की प्रतिनिधि मंडल ने राष्ट्रपति से शिष्टाचार भेंट। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के मणिपुर प्रवास के दौरान ब्रह्माकुमारीज़ मणिपुर राज्य की प्रभारी बीके नीलिमा ने छह अन्य ब्रह्माकुमारी बहनों के साथ लोक भवन इंफाल में शिष्टाचार भेंट की। बीके नीलिमा ने राष्ट्रपति को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका अभिनंदन किया।

शिव आमंत्रण, दिल्ली | राष्ट्रपति भवन में ब्रह्माकुमारीज़ के वैज्ञानिक, अभियंता एवं वास्तुविद (एसईए) विंग चेयरपर्सन राजयोगी बीके मोहन सिंघल भाई के नेतृत्व में विंग के पदाधिकारियों ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर एसईए विंग की ओर से राष्ट्रपति को स्मृति-चिह्न भेंट किया गया।

शिव आमंत्रण, पटना, बिहार | राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने राजभवन में माउंट आबू की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका एवं गीता ज्ञान की प्रख्यात विदुषी बीके उषा दीदी को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर राज्यपाल ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा देश-विदेश में किए जा रहे आध्यात्मिक, नैतिक एवं मूल्य-आधारित सेवाकार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि आत्मिक सशक्तिकरण, शांति, सद्भाव और मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार में ब्रह्माकुमारीज़ की भूमिका समाज के लिए अत्यंत उपयोगी है। कंकड़बाग सेवाकेंद्र की संचालिका बीके संगीता दीदी भी मौजूद रहीं।

शिव आमंत्रण, गंजबासौदा, मप्र | ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शिक्षक स्नेह मिलन व सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें एग्रीकल्चर महाविद्यालय के डॉ. योगेश पटेल, सेंट जोसेफ स्कूल से प्रिंसिपल बोसी सर, शाउमावि की प्रिंसिपल शिल्पांजना शर्मा, डॉल्फिन स्कूल प्रिंसिपल संदीप जेकली, लिटिल फ्लावर स्कूल से प्रिंसिपल छवि राठौर, सेंट एसआरएस स्कूल से प्रिंसिपल रजनी मैम, भारत माता कॉन्वेंट स्कूल से समस्त स्टाफ को सम्मानित किया गया। इस दौरान बीके रेखा दीदी, बीके रुक्मणी दीदी, बीके नन्दनी बहन, बीके अनु बहन मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, अंबिकापुर, छग | ग्राम असकला में राष्ट्रीय किसान दिवस नशा मुक्त जागरुकता के रुप में मनाया गया। कार्यक्रम में ग्राम पंचायत उपाध्यक्ष देवनारायण यादव, जनपद सदस्य हलीम फिरदौसी, आर्ट ऑफ़ लिविंग के संचालक अजय तिवारी, सरपंच लखेश्वर पैकरा, उप सरपंच चोलेश्वर यादव, मंगल पांडे, बीके अहिल्या एवं बीके संचालिका सरगुजा संभाग बीके विद्या ने द्वीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

ओआरसी में जनजातीय युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम

जीवन की सबसे बड़ी पूंजी हैं श्रेष्ठ संस्कार: बिंदू दीदी

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम, हरियाणा।

ब्रह्माकुमारीज़ के बहोड़ाकलां स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में 17वें जनजातीय युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम का आयोजन भारत सरकार के गृह मंत्रालय एवं युवा मामले एवं खेल मंत्रालय के अंतर्गत मेरा युवा भारत के तत्वावधान में हुआ।

मेरा युवा भारत के उत्तरी क्षेत्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. लाल सिंह ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य आदिवासी एवं जनजाति के युवाओं को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ना है। उन्हें देश की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत से परिचित कराना है।

डॉ. सिंह ने कहा कि सप्ताह भर चलने वाले इस आयोजन में नशा मुक्त भारत, आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत 2047 जैसे विषयों पर कार्यशालाएं एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियां आयोजित की जाएंगी। साथ ही आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों के आधार पर श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण करना है। ये हमारा सौभाग्य है कि इस कार्यक्रम का उद्घाटन योग की तपोभूमि पर हो रहा है।

विश्व जागृति मिशन की उपाध्यक्ष डॉ. अर्चिका सुधांशु ने कहा कि जीवन ईश्वरीय सौगात है। हर कोई अच्छा बनना चाहता है। लेकिन भय मनुष्य को आगे नहीं बढ़ने देता। इसलिए हमें डर पर जीत पानी है। स्वयं पर विश्वास होना जरूरी है। हमेशा सोचें कि ईश्वरीय शक्ति सदा मेरे साथ है। जिन्हें स्वयं पर विश्वास होता है, वो लोग ही अद्भुत करते हैं। जीवन में कुछ पाने के लिए लचीलापन होना जरूरी है। सफलता के लिए हमेशा कुछ न कुछ सीखना जरूरी है। कार्य कैसा भी हो सदैव खुश रहकर करें।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सिरसा स्थित सेवाकेंद्र प्रभारी राजयोगिनी बीके बिंदु दीदी ने कहा कि नकारात्मक विचार ही खुशी को कम करते हैं। हमारा जीवन प्रेरणा स्रोत होना चाहिए। आशावादी व्यक्ति ही सदा खुश रह सकता है। श्रेष्ठ संस्कार ही जीवन की सबसे बड़ी पूंजी हैं। दूसरों को देखने में समय गंवाने के बजाए स्वयं पर ध्यान देना है। कार्यक्रम में देश के विभिन्न प्रांतों से 230 युवाओं ने शिरकत की। संस्थान के गायक कलाकार बीके चांद बजाज ने गीत के द्वारा सबका स्वागत किया। युवाओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई। ओआरसी की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके हुसैन ने संस्थान का परिचय दिया एवं मंच संचालन किया।

ध्यान से होता है संकल्प, दृष्टिकोण, कर्म चारित्र का निर्माण

विश्व ध्यान दिवस : शांति, प्रेम, सद्भावना, एकाग्रता और आत्म-जागृति का दिया संदेश

शिव आमंत्रण, छतरपुर, मप्र। विश्व ध्यान दिवस श्रद्धा एवं शांति के वातावरण में मनाया गया। इस दिवस का उद्देश्य मानव जीवन में ध्यान के महत्व को उजागर करना तथा मानसिक शांति, आत्म-संयम और सकारात्मक सोच को प्रोत्साहित करना है।

आज के तनावपूर्ण और तेज़ रफ्तार जीवन में ध्यान एक ऐसी आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक विधि है, जो मन को स्थिर, बुद्धि को स्पष्ट और आत्मा को शक्तिशाली बनाती है। ध्यान के नियमित अभ्यास से व्यक्ति न केवल मानसिक तनाव, चिंता और नकारात्मक विचारों से मुक्त होता है, बल्कि उसके व्यवहार में भी शांति, सहनशीलता और प्रेम का संचार होता है।

ब्रह्माकुमारीज़ के किशोर सागर सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम में प्रभारी बीके शैलजा दीदी ने कहा कि यह दिन हमें विशेष योग का महत्व बताते हुए सारे विश्व के लिए शांति के, प्रेम के, सद्भावना के वाइब्रेशन चारों ओर फैलाने हैं। हमें ध्यान करना है और ध्यान देना है। ध्यान देना है अपने संकल्पों पर क्योंकि हमारे संकल्प ही शब्द बनते हैं। हमें ध्यान देना है हमारे शब्दों पर क्योंकि हमारे शब्द ही हमारे दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं। हमें ध्यान देना है हमारे दृष्टिकोण पर क्योंकि जैसा दृष्टिकोण होगा वैसा ही हमारा कर्म होगा। हमें ध्यान देना है हमारे कर्मों पर वही हमारे चरित्र का निर्माण करते हैं। हमें ध्यान देना है हमारे चरित्र पर वही हमारे भाग्य का हमारे भविष्य का निर्धारण करते हैं। ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा सभी को मेडिटेशन कामेंट्री के माध्यम से सामूहिक ध्यान से कराया गया।

विश्व ध्यान दिवस की सार्थकता ब्रह्माकुमारीज़ ही साकार कर सकती है: निशंक

शिव आमंत्रण, देहरादून, उत्तराखंड | विश्व ध्यान दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा विश्व एकता एवं विश्वास हेतु ध्यान विषय पर सम्मेलन आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल "निशंक" ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ अंतर्मन की यात्रा अनुभूति का अनुपम केंद्र है।“ जो ध्यान करता है वही ध्यान रख सकता है और ध्यान दे सकता है।” उन्होंने कहा कि मनुष्य को पतन से रोकने का सबसे बड़ा तंत्र-मंत्र-यंत्र यही ईश्वरीय विश्व विद्यालय है। कर्मयोग का मार्ग ही राजयोग तक जाता है। ध्यान आत्मा का परमात्मा से मिलन है, और इसी से आनंद की अनुभूति संभव है। उन्होंने श्रीमद्भागवत गीता का उल्लेख करते हुए कहा कि जहां योगेश्वर हैं, अर्जुन धनुर्धर हैं, वही विजय होती है। योगेश्वर जहां ईश्वर हैं, वहीं अर्जुन कर्मयोगी हैं। इन्ही से चेतना जन्मती है और आत्मा का परमात्मा से मिलन हो जाता है।

आचार्य रमेश सेमवाल महाराज (अध्यक्ष, महर्षि पराशर ज्योतिष गुरुकुलं पीठाधीश्वर, नवग्रह शक्तिपीठ) ने कहा कि आत्म-साक्षात्कार का मार्ग ध्यान योग ही दिखा सकता है। ब्रह्माकुमारियों की महिमा करते हुए उन्होंने कहा आप शिवबाबा को मानने वाले हैं, मुझे विश्वास है कि वसुधैव कुटुंबकम् की संकल्पना इसी विश्व विद्यालय द्वारा साकार हो सकती है। ज्योतिषाचार्य डॉ. संतोष खंडूड़ी ने कहा कि ध्यान, धारणा और समाधि के द्वारा ही परम तत्त्व का अनुभव किया जा सकता है। सबज़ोन की संचालिका बीके मंजू दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, ग्वालियर, मप्र | विश्व ध्यान दिवस पर अम्मा महाराज की छतरी में राजयोग ध्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें सेवाकेंद्र प्रमुख बीके आदर्श दीदी ने कहा कि आज के तनावपूर्ण जीवन में ध्यान ही वह माध्यम है, जो मन को स्थिर कर आत्मिक शक्ति प्रदान करता है। उन्होंने सभी को प्रतिदिन कुछ समय ध्यान के लिए निकालने की प्रेरणा दी। बाहरी शांति से पहले आंतरिक शांति आवश्यक है। राजयोग ध्यान उसी आंतरिक यात्रा का मार्ग है। जब हमारा मन शांत होता है, तो विचार पवित्र होते हैं और पवित्र विचार ही सुंदर संसार का निर्माण करते हैं। सिविल जज ग्वालियर शिवकांत कुशवाह, भारतीय योग संस्थान से प्रांतीय प्रधान महेश अग्रवाल, म.प्र. चैम्बर ऑफ़ ऑफ़ कॉमर्स अध्यक्ष प्रवीण अग्रवाल, योग प्रशिक्षक राजेंद्र अग्रवाल, छतरी प्रबंधक जयन्त जपे, बीके प्रहलाद भाई उपस्थित थे।

शिव आमंत्रण, दावणगेरे, कर्नाटक | ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अंतरराष्ट्रीय ध्यान दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके रामनाथ भाई, सिद्ध समाधि योग सिखाने वाली रेणुका देवी, योग और योगासन सिखाने वाले करीबसप्पा कनकुप्पी, ओशो योग के शिक्षक शिवकुमार, पिरामिड ध्यान सिखाने वाले मारुति राव, आर्ट ऑफ लिविंग के शिक्षक शिवकुमार, बीके सुरेश उपस्थित थे। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके लीला दीदी ने राजयोग का अर्थ बताते हुए राजयोग मेडिटेशन से शांति की गहन अनुभूति कराई। ब्रह्माकुमारी शांता दीदी मंच संचालन किया। ब्रह्माकुमारी गौरम्मा दीदी ने स्वागत किया। बीके मंजूनाथ ने अभिवादन किया।

शिव आमंत्रण, जमशेदपुर, झारखंड | विश्व ध्यान दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा यूनिवर्सल पीस पैलेस रिट्रीट सेंटर, मरीन ड्राइव, सोनारी में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें बीके अंजू दीदी क्षेत्रीय प्रमुख, कोल्हान क्षेत्र ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की संक्षिप्त जानकारी दी और मानसिक शांति व सकारात्मक जीवन के लिए ध्यान को आवश्यक बताया। बीके प्रियंका बहन ने कहा कि मन को सशक्त बनाने का सर्वोत्तम उपाय ईश्वर से निरंतर जुड़ाव है। राजयोग ध्यान वह सहज विधि है, जिसके माध्यम से ईश्वर से संबंध जोड़कर उसकी शक्तियों और आशीर्वादों का जीवन में स्वाभाविक अनुभव किया जा सकता है। संचालन बीके निशांत भाई ने किया।

शिव आमंत्रण, मथुरा, उप्र | अंतराष्ट्रीय ध्यान दिवस पर ब्रह्माकुमारी संस्था के तत्वावधान में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, 16वीं बटालियन सीआरपीएफ और मथुरा रिफाइनरी सीआईएसएफ में प्रशिक्षुओं के लिए विशेष राजयोग ध्यान सत्र का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रुप में रिफाइनरी नगर सेवाकेंद्र प्रभारी राजयोगिनी बीके कृष्णा दीदी ने राजयोग ध्यान की विधि को सरल शब्दों में समझाया और इसे दैनिक जीवन में अपनाने का आह्वान किया। रिफाइनरी मे चीफ मैनेजर बीके प्रमोद वर्मा ने राजयोग से होने वाले लाभों पर प्रकाश डाला। बीके आलोक ने संस्था का परिचय दिया। बीके पूजा ने प्रशिक्षुओं को राजयोग के माध्यम से सभी को ध्यान की गहन अनुभूति कराई।

वैशाली नगर एवं बनीपार्क सेवाकेंद्र द्वारा त्रिदिवसीय गीता ज्ञान शिविर का आयोजन

मन, वचन, कर्म की शुद्धता से ही जीवन में सुख-शांति आती है

शिव आमंत्रण, जयपुर (राजस्थान)।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, जयपुर सबज़ोन के अंतर्गत वैशाली नगर एवं बनीपार्क केंद्र द्वारा त्रिदिवसीय गीता ज्ञान शिविर का आयोजन किया गया। वैशाली नगर स्थित प्रभु निधि सभागार एवं बनीपार्क स्थित जनोपयोगी भवन में शिविर आयोजित किया गया, जिसमें जयपुर शहर के हजारों गणमान्य नागरिकों, साधकों एवं भाई-बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

शिविर के प्रथम दिन गीता ज्ञान से जीवन की दिशा सत्र में समाजसेवी नवीन कुमार भंडारी ने कहा कि गीता केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाली व्यवहारिक जीवन-पद्धति है। आज के तनावपूर्ण समय में राजयोग और गीता ज्ञान आत्मिक शांति, सकारात्मक सोच एवं नैतिक मूल्यों को जाग्रत करने का प्रभावी माध्यम है।

जयपुर सबज़ोन प्रभारी राजयोगिनी सुषमा दीदी ने गीता ज्ञान को जीवन में उतारने का संकल्प व्यक्त किया। मुख्य वक्ता राजयोगिनी बीके वीणा दीदी ने गीता के गूढ़ रहस्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि राजयोग के माध्यम से आत्मा-परमात्मा से जुड़कर अपने वास्तविक स्वरूप की पहचान करती है, जिससे आत्म-परिवर्तन संभव होता है।

द्वितीय दिन जीवन उपयोगी ज्ञान से प्रेरणा कार्यक्रम में पूर्व विधायक एवं जयपुर के प्रथम महापौर मोहनलाल गुप्ता सहित अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। इसमें राजयोगिनी बीके वीणा दीदी ने गीता ज्ञान को दैनिक जीवन में अपनाने, सकारात्मक दृष्टि विकसित करने तथा आत्मिक सशक्तिकरण पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए।

वहीं तीसरे दिन कर्म सिद्धांत एवं विश्व ध्यान दिवस का विशेष आयोजन। इसमें बीके वीणा दीदी ने बताया कि मन, वचन और कर्म की शुद्धता से ही जीवन में सुख-शांति एवं सफलता प्राप्त होती है। वैशाली नगर केंद्र प्रभारी राजयोगिनी चंद्रकला दीदी एवं बनीपार्क केंद्र प्रभारी राजयोगिनी लक्ष्मी दीदी ने बताया कि त्रिदिवसीय गीता ज्ञान शिविर के माध्यम से नागरिकों ने आत्मिक शांति, जीवन परिवर्तन एवं श्रेष्ठ कर्मों की प्रेरणा प्राप्त की। शिविर में बड़ी संख्या में लोगों की सहभागिता रही।

सुहाना सफर कार्यक्रम आयोजित, अधिकारियों का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, बिलासपुर, छग।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के ट्रांसपोर्ट विंग द्वारा बिलासपुर के शिव-अनुराग भवन में सड़क दुर्घटना पीड़ितों की स्मृति में विश्व यादगार दिवस पर आयोजित सुहाना सफर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुंबई से पधारीं और ट्रांसपोर्ट एंड ट्रैवल विंग की नेशनल कोऑर्डिनेटर बीके कविता दीदी ने अपने संबोधन में कहा कि लोग भले कहते हैं कि 'जिंदगी एक सफर है सुहाना, यहां कल क्या हो? किसने जाना?', लेकिन चूंकि भविष्य में परमात्मा द्वारा एक नई दुनिया की स्थापना का दिव्य कर्तव्य किया जा रहा है, हम अनुभव करते हैं कि 'यहां कल क्या हो, यह हमने जाना। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मंजू दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में पुलिस महानिरीक्षक, रेलवे पुलिस, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर के मुनव्वर खुर्शीद, रायपुर के एडिशनल कलेक्टर हर्ष पाठक, महायोग पीठधारा के आचार्य मनोहर भंडारी गुरुजी, रेल सुरक्षा बल के वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त दिनेश सिंह तोमर सहित अनेक गणमान्य नागरिक शामिल थे। इस दौरान सभी का संस्थान द्वारा सम्मान किया गया।

खुद पर ध्यान देंगे तो सुधरेंगे रिश्ते

शिव आमंत्रण, नोएडा।

नोएडा में आयोजित विशेष सत्र में प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु और मोटिवेशनल स्पीकर ब्रह्माकुमारी शिवानी ने कहा कि रिश्ते सुधारने का सबसे प्रभावी तरीका है- खुद पर ध्यान देना, दूसरों को बदलने की कोशिश नहीं करना। बीके शिवानी ने शुरुआत में ही एक सीधा प्रश्न रखाः "क्या आप भावनात्मक रूप से प्रदूषित मन से अपने रिश्तों को खुशी दे सकते हैं?। उन्होंने कहा कि आजकल सोशल मीडिया, न्यूज़ और आसपास के माहौल में नेगेटिविटी इतनी अधिक है कि बिना जाने हमारा मन "भावनात्मक कचरे" से भर जाता है और जब मन भारी होगा, तो शब्द भी भारी होंगे, व्यवहार भी कठोर होगा, और वही घर का वातावरण बिगाड़ देगा।

उन्होंने कहा कि हमें रोज़ यह देखना होगा कि हम कौन-सी जानकारी अपने भीतर जाने दे रहे हैं। आपका मन आपकी आंतरिक दुनिया है। अगर वहां गंदगी है, तो बाहर रिश्तों में भी गंदगी दिखाई देगी। दिन की शुरुआत कुछ मिनट शांति, सकारात्मक पढ़ाई, सुनने और कम नेगेटिव कंटेंट के साथ करें।

रायपुर के इंडोर स्टेडियम में शिवानी दीदी को सुनने उमड़ा जनसैलाब

धन के साथ-साथ लोगों की दुआएं भी अर्जित करें : शिवानी दीदी

शिव आमंत्रण, रायपुर/छग।

जीवन प्रबन्धन विशेषज एवं मोटिवेशनल स्पीकर ब्रह्माकुमारी शिवानी दीदी ने कहा कि सिर्फ अपने लाभ के बारे में न सोचें बल्कि दूसरों के कल्याण के बारे में भी सोचें। इससे आप लोगों का विश्वास जीत सकेंगे। दूसरों के लाभ में आपका कल्याण भी समाया हुआ है। व्यवसाय के साथ लोगों की दुआएं और पुण्य अर्जित करें। इससे धन के साथ घर में खुशी भी आएगी। जैसे व्यवसाय में उत्पाद की गुणवत्ता पर ध्यान देते हैं ऐसे ही अपने विचारों की गुणवत्ता पर भी ध्यान दें तो जीवन खुशहाल बन जाएगा।

इण्डोर स्टेडियम में शिवानी दीदी को सुनने के लिए लोकसभा सांसद बृजमोहन अग्रवाल, महापौर मीनल चौबे, नागरिक आपूर्ति निगम के अध्यक्ष संजय श्रीवास्तव, पूर्व विधायक कुलदीप जुनेजा, पूर्व महापौर प्रमोद दुबे, छग चेम्बर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष सतीश थौरानी, पूर्व विधायक श्रीचन्द सुन्दरानी, क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी, बीके आशा दीदी, रायपुर की संचालिका बीके सविता दीदी सहित भारी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। व्याख्यान का विषय था- अनिश्चितता से मुकाबला।

बीके शिवानी दीदी ने कहा कि जिस प्रकार शरीर की सफाई रोज जरुरी है वैसे ही मन की सफाई भी जरुरी है। रात को सोने से एक घण्टा पहले फोन और टेलीविजन देखना बन्द कर दें। यह हमारी नींद और जीवन की खुशियां छीन रहा है।

साधन को मालिक बनकर उपयोग करें-

शिवानी दीदी ने कहा कि हम सारा दिन शरीर की खुशी प्राप्त करने के लिए मेहनत करते हैं लेकिन शाम को जब घर आते हैं तो अपना समय परिवारजनों के साथ बिताने की बजाए फोन और टेलीविजन के संग बिताने लगते हैं। हम मोबाईल के गुलाम बन गए हैं। साधन को मालिक बनकर उपयोग करें लेकिन उसके गुलाम नहीं बने। खाली समय का उपयोग पुस्तक पढ़ें और संगीत सुनने में करें। नींद की कमी से शरीर बीमार हो रहा है। तनाव और अवसाद बढ़ रहा है। असमय ही हृदय रोग और कैंसर का सामना करना पड़ रहा है। कम बोलें, धीरे बोलें और मीठा बोलें। इसी में जीवन का सुख समाया हुआ है। रास्ते में किसी ने गाड़ी को ठोकर मार दी तो गुस्सा न करें। हमारी खुशी गुम न हों। गाड़ी तो मरम्मत करके ठीक की जा सकती है किन्तु गुस्से के कारण जो स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचेगा उसकी भरपाई नहीं हो पाएगी। आज आत्मा को मेडिटेशन के माध्यम से चार्ज करने की आवश्यकता है।

केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल बोले- आज मैं श्रोता के रूप में बीके शिवानी दीदी को सुनने आया हूं...

शिव आमंत्रण, बीकानेर, राजस्थान।

आध्यात्मिक कार्यक्रम के लिए बीके शिवानी दीदी के नाल एयरपोर्ट बीकानेर आगमन होने पर केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल द्वारा गुलदस्ता भेंट कर स्वागत किया गया। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सार्दुल गंज सेवाकेंद्र द्वारा विशाल नया संकल्प-नया जीवन कार्यक्रम श्रीगणेशम् रिसॉर्ट में आयोजित किया गया। शुभारंभ केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल और प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी ने दीप प्रज्वलन कर किया।

इसमें विश्व प्रख्यात आध्यात्मिक प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी ने कहा कि सकारात्मक सोच व संकल्प को दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। सुबह उठते ही व सोने से पहले मोबाइल का त्याग कर सकारात्मक चिंतन करने व ध्यान योग के अभ्यास द्वारा मन को एकाग्र कर श्रेष्ठ संकल्पों से श्रेष्ठ जीवन बनाने के लिए प्रेरित किया।

मुख्य अतिथि केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि शिवानी दीदी का जीवन आध्यात्मिक चेतना का पर्यायवाची बन चुका है। इस तरह के आध्यात्मिक कार्यक्रम भारत को आध्यात्मिक गुरु के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में एक नई पहल है। अतः आज इस कार्यक्रम में मैं एक श्रोता के रूप में सुनने आया हूं।

इस दौरान बीकानेर संभाग की संचालिका बीके कमल दीदी, आबू से पधारे मोटिवेशनल स्पीकर बीके शक्ति राज भाई, मंच संचालक श्रीनिधि भाई एवं सुप्रसिद्ध गायक हरीश मोयल, विश्वनाथ मेघवाल (विधायक खाजूवाला), नरेश कुमार ठकराल सदस्य सचिव राज्य वित्त आयोग, विश्राम मीणा संभागीय आयुक्त, डॉ. सुरेंद्र वर्मा प्रधानाचार्य सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज, सुभाष मित्तल उद्योगपति, महावीर रांका उद्योगपति सहित शहर के हर वर्ग से जुड़े प्रतिष्ठित गणमान्य जनों के साथ सात हज़ार से भी अधिक लोगों ने शांति और अनुशासन का परिचय देते हुए इस सुनहरे अवसर का लाभ लिया।

गीता के वचन अनुसार परमात्मा शिव धरती पर अवतरित हो चुके हैं: बीके सीता

शिव आमंत्रण, मुज़फ्फरपुर, बिहार | साहू पोखर मंदिर परिसर में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा तीन दिवसीय विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी लगाई गई। उद्घाटन वार्ड 22 के पार्षद प्रतिनिधि संजीव कुमार गुप्ता, मंदिर सचिव संजय कुमार, वार्ड 20 के पार्षद संजय कुमार केजरीवाल, बीके सीता दीदी, समाजसेवी एचएल गुप्ता, मंदिर के पुजारी पवन दास ने फीता काट कर किया। इस अवसर पर बीके सीता बहन ने कहा कि वर्तमान समय कलियुग अंत और सतयुग के आदि का समय पुरुषोत्तम संगमयुग चल रहा है। वर्तमान समय अपने गीता के वचन अनुसार परमात्मा शिव धरती पर अवतरित होकर एक सतयुगी आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना का कर्तव्य कर रहे हैं। उसके लिए हमें ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं।

रक्तदान आपको अनेकों दुआओं का अधिकारी बना देता है: बीके हेमलता दीदी

शिव आमंत्रण, इंदौर, मप्र

ज्ञानशिखर में ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाईजी की दसवीं पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। इस अवसर पर इंदौर जोन की क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी ने कहा कि रक्तदान महादान है, क्योंकि रक्त केवल मानव शरीर में ही निर्मित होता है इसको बनाने की कोई फैक्ट्री नहीं होती। ऐसे में आपके द्वारा दिया गया रक्त जरूरत के समय किसी के लिए वरदान, जीवनदान हो सकता है जो आपको उनकी अनेकों दुआओं का अधिकारी बना देता है। यह केवल पुण्य नहीं अपितु महापुण्य है।

सोडाणी डायगनोस्टिक के डायरेक्टर डॉ. राजेंद्र सोडाणी ने कहा कि हमारे में अंदर से रक्तदान की भावना विकसित होनी चाहिए क्योंकि रक्त देने से कम नहीं होता बल्कि पुनः और अधिक रक्त का निर्माण हो जाता है, साथ-साथ किसी को मदद भी मिल जाती है। इसलिए रक्तदान सबसे बड़ा परोपकार है।

कस्टम विभाग के अपर आयुक्त डॉ. दिनेश बिसेन ने कहा की जितनी शुद्ध आत्मा इस शरीर में होगी उस शरीर में बनने वाला खून भी उतना ही शुद्ध होगा। तो एक यूनिट रक्तदान करने से हम तीन तरह से किसी की जिंदगी बचा सकते हैं। एमवाय हॉस्पिटल के ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग के संचालक डॉ. नरेंद्र वर्मा ने भी संबोधित किया। शिविर में कुल 85 यूनिट ब्लड का संग्रह किया गया।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, विले पार्ले, मुंबई | दृष्टिबाधित खिलाड़ियों के साहस, जज्बे और अदम्य इच्छाशक्ति को सलाम करते हुए पहले महिला टी-20 वर्ल्ड कप फॉर द ब्लाइंड में अपराजेय प्रदर्शन कर खिताब जीतने वाली भारतीय महिला टीम को मुंबई में ब्रह्माकुमारीज ने सम्मानित किया। विले पार्ले सेवाकेंद्र से बीके अमृता बहन और बीके डॉ. दीपक हरके ने टीम की कैप्टन दीपिका टीसी तथा सभी खिलाड़ियों को परमात्मा का स्मृति चिंह भेंटकर सम्मानित किया।

शिव आमंत्रण, ब्यावरा, मप्र | वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान और पीढ़ियों के बीच रिश्तों को मजबूत करने के उद्देश्य से केंद्रीय सामाजिक न्याय विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री वीरेंद्र कुमार से सेवाकेंद्र की संचालिका बीके लक्ष्मी दीदी ने स्नेह मुलाकात एवं ज्ञान चर्चा कर ईश्वरीय सेवाओं की जानकारी दी।

शिव आमंत्रण, नवरंगपुर, उड़ीसा | नवरंगपुर जिला के मालिगुड़ा क्षेत्र में नशा मुक्त भारत अभियान मोबाइल वैन के द्वारा बालिका छात्रावाल, उच्च माध्यमिक विद्यालय, नेषनाहंडी के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए, नंदाहंडी सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय, हाई स्कूल, गवर्नमेंट हाई स्कूल मालीगुड़ा के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए नशामुक्ति का संदेश देते हुए प्रतिज्ञा कराई गई।

शिव आमंत्रण, बिलासपुर, छग | स्वदर्शन भवन शुभम बिहार के तत्वावधान में वसुंधरा नगर कल्याण समिति में आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी लगाई गई। जिसमें वसुंधरा नगर कल्याण समिति वरिष्ठ भाई-बहनों ने राजयोग के बारे में समझा। सेवाकेंद्र संचालिका सविता दीदी ने परमपिता परमात्मा शिव का संदेश दिया।

शिव आमंत्रण, झोझूकलां (हरियाणा)| द्वितीय वैश्विक ध्यान दिवस पर हरियाणा योग आयोग, जिला प्रशासन व आयुष विभाग एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में सेवाकेंद्र पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें संचालिका बीके वसुधा दीदी ने कहा कि भारतीय संस्कृति की योग ध्यान और अध्यात्म की शक्ति से ही दुनिया में शांति संभव। योग ,ध्यान, आत्मा को परमात्मा में जोड़ने का सहज मार्ग है। भारत अपनी आध्यात्मिक शक्ति से पुन: विश्व गुरु बनने की ओर है।

रियल लाइफ

साधारण मानवी तन में वह विचित्र प्रभु स्वयं पधारते हैं...

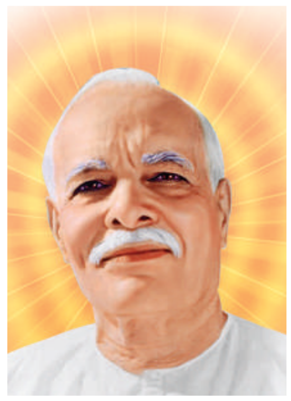

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू

जिन्हें ज्ञान-दृष्टि प्राप्त नहीं है, वे बेचारे तो यह जान नहीं सकेंगे कि इस साधारण मानवी तन में वह विचित्र प्रभु स्वयं पधारते हैं।

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

बाबा ने यह भी लिखा - 'देखो बच्चे, स्टेशन पर कोई भी फूल न लाए और ज्यादा बच्चों के आने की जरूरत ही नहीं है। बच्चे, फालतू खर्च नहीं करना है क्योंकि आप वत्स अब यह तो समझ चुके हैं कि ज्ञानवान मनुष्य का तो एक-एक पैसा अनमोल है जिसे वह दूसरों की ज्ञान-सेवा में लगाकर सफल कर सकता है।

वत्सो, मैं न तो कोई साधु हूं न महात्मा, मैं तो 'बाबा' हूँ; अतः फूल लाने का क्या अर्थ ? बाप तो आप वत्सों को सदा फूलों की तरह खिले हुए देखना चाहता है। माया आपमें कभी भी मुरझाहट न लाएं! आपमें दिव्य गुणों की सुगन्धि बनी रहे और उस द्वारा अनेकानेक जनों को यह परिचय मिले कि अवश्य ही ज्ञान-सूर्य परमपिता परमात्मा का कर्त्तव्य चल रहा होगा, तभी तो इनमें दिव्य गुणों की यह अनोखी सुगन्धि है। आप वत्सों ने ही तो अपने पिता को प्रत्यक्ष करना है, क्योंकि प्रसिद्ध उक्ति भी इसी प्रकार है (Son shows father)।

ब्रह्माकुमारी धैर्यमणि जी ने लिखा है- चतुर सुजान बाबा की ये निराली ही युक्तियाँ थीं जिससे वे सदा जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए शिक्षा देते तथा ज्ञान के मनोरम रहस्यों से परिचित कराते रहते। बाबा ने यह भी निर्देश दिया था कि सभा में केवल उन्हीं को प्रवेश दिया जाये जो ब्रह्मचर्य का तथा आहार-विहार की शुद्धि का पालन करते हों और सही अर्थ में आस्तिक हों ताकि ऐसा न हो कि उस परम पावन शिव बाबा के इस पृथ्वी पर आने पर कोई अज्ञानता एवं विकारों के वशीभूत होदार उनके महावाक्यों की अवज्ञा करके पाप का भागी बने।

बाबा ने यह लिख दिया था कि शिव बाबा तो गुप्त है क्योंकि इन चर्म-चक्षुओं द्वारा तो उसे देखा नहीं जा सकता। अतः जिन्हें ज्ञान-दृष्टि प्राप्त नहीं है, वे बेचारे तो यह जान नहीं सकेंगे कि इस साधारण मानवी तन में वह विचित्र प्रभु स्वयं पधारते हैं। अतः बाबा कहते 'बच्चे, बाप तो साधारण मनुष्य-तन में आते हैं अतः वे साधारण रीति ही आप वत्सों के बीच आयेंगे। ठाठ-बाट या बनाव-श्रृंगार करने की जरूरत नहीं है। इस कलियुगी दुनिया की तो सारी चीजें माया से मैली हुई हैं, बाबा तो इनका अन्त हुआ देखते हैं अतः इनसे मन को उपराम करके अब हमें अपना परमधाम तथा वैकुण्ठधाम ही याद रखना है जहां हरेक वस्तु स्वाभाविक रीति से अत्यन्त सुन्दर एवं सुखदायक है।

बाबा का शुभागमन...

आखिर इस कल्प में वे अत्यन्त शुभ घड़ियाँ आ गई जब प्राणों से भी प्यारे, राज्य-भाग्य के दाता, दिव्य दृष्टि विधाता, परमपिता का दिव्य रीति से स्वागत करने का स्वर्णावसर मिला। सभी अपने हृदय को ज्ञान-पुष्पों से संजोकर प्यारे बाबा से मिले। जो सारी सृष्टि को हरा-भरा गुलशन बनाने वाला बाबा है, उसको 'फूलों' ने 'फूल' भी अर्पित किये। परन्तु वे फूल और उनके पीछे की भावना अलौकिक और न्यारी थी। नित्य प्रति अमृतवेले सभी ब्रह्मा-वत्स शिव बाबा की मधुर ज्ञान-मुरली सुनने आते और उन्हें ऐसा महसूस होता कि जैसे उन्हें अतुल धन की लाटरी मिल गयी हो। उनसे मिलने वाले लोग आश्चर्य में पड़ जाते कि आख़िर इनमें इतनी खुशी का कारण क्या है। उन्हें क्या मालूम कि ज्ञान-गुण-सागर, प्रेम-सागर, आनन्द-सागर परमात्मा इन आत्माओं की जन्म-जन्मान्तर की ज्ञान-पिपासा तृप्त कर रहे हैं और इन्हें अपार अतीन्द्रिय सुख दे रहे हैं। बाबा नित्य नये, गुह्य एवं रमणीय ज्ञान-विज्ञान से लाभान्वित करते रहे। थोड़े ही दिनों में सभी ऐसा महसूस करने लगे कि उनकी आध्यात्मिक कमज़ोरियाँ काफ़ी मात्रा में समाप्त हो गयी हैं, उनके जो संस्कार मिट नहीं पा रहे थे, वे सहज ही मिट गये हैं कि जैसे वे थे ही नहीं।

उन्हें मालूम होता कि जिन मनोविकारों को वे दुर्जेय माने बैठे थे, वे तो वास्तव में कागज़ के शेर की तरह मानो पहले से ही मरे हुए थे। आहा आहा! जीवन हो तो ऐसा हो कि जिसमें न कोई ग़म है, न चिन्ता और ईश्वरीय मस्ती से भरपूर तथा विकारों से दूर और न्यारा और प्यारा है। अब सभी को यह अनुभव हुआ कि वास्तव में पवित्र बनने के लिए घर-गृहस्थ को छोड़कर जंगल में जाने की आवश्यकता नहीं है। बाबा प्रायः अपने दिव्य प्रवचनों में कहा भी करते 'वत्सो, कर्म-संन्यासी तो अपने गृहस्थ एवं व्यापार को छोड़ कर जंगलों में चले जाते हैं। क्रमशः

प्रेरणापुंज

किसी भी आत्मा का, व्यक्ति या वैभव का सहारा नहीं पकड़ो

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

जैसी हूं उसने अपना बना लिया। सेकण्ड में कहा तू मेरी हो, लेकिन सदा उसकी होकर रहने के लिए पिताव्रत, सतीव्रत चाहिए। बाबा से प्यार क्यों है? उसका भी इतना प्यार है। दो हाथ की ताली बजती है। बाबा ने सब कुछ आपे ही दिया है। बाबा हमें सिखाता है कि क्यों-क्या में अपनी एनर्जी वेस्ट नहीं करो। बुद्धि अच्छा काम करे, दिव्य बुद्धि दाता ने हमारी बुद्धि को दिव्य बनाया है। हमेशा ध्यान रखें - मेरी बुद्धि बाबा तेरे समान बने। दृढ़ संकल्प से एकाग्रता की शक्ति आएगी। फिर विचार सागर मंथन करो तो रत्न निकल आएंगे। जितना गहराई में जाएंगे उतना यहां की सुधबुध भूल जाएगी। लहरों से कौड़ी लेकर खुश हो जाएंगे। जैसे मछली मारने वाले उसमें ही खुश हो जाते हैं, ऐसे हम भी थोड़े में ही खुश हो जाएं हम वह थोड़े ही हैं। हम कोई ऊपर-ऊपर से कौड़ियां इक्ट्ठी करने वाले नहीं हैं तो बुद्धि को साफ स्वच्छ रखकर दृढ़ता की शक्ति, एकाग्रता की शक्ति से बुद्धि को स्थिर बनाना है। कितना समय बुद्धि को स्थिर बना सकती हूं? बाबा ने यह बहुत प्रैक्टिस कराई।

राजयोगिनी दादी जानकी, पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज, माउंट आबू

बच्चे मेरे पास आकर बैठ जाओ। बाबा जो युक्तियां सिखाता है वह करो, ब्रह्मांड में बाबा के पास बैठ जाओ। अव्यक्त स्थिति भी व्यक्त भाव से दूर करने में मदद करती है। व्यक्त भाव, व्यक्त बोल, व्यक्त संकल्प नीचे उतारते हैं। उसमें कभी गमी, कभी खुशी थोड़े समय की खुशी होगी, गमी जल्दी आ जाएगी। उसको मिटाना मुश्किल। बाबा ने कहा सीधा सादा रास्ता बताता हूं जब डीप अन्दर जाने का रस बैठ जाएगा तो बाबा के समीप रहेंगे। फिर कहां भी हों साथ का अनुभव करते रहेंगे। सदा अन्दर अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते रहेंगे। जो पास आएगा उसका भी जी चाहेगा - मैं भी ऐसे रहूं। बातें बहुत आएंगी लेकिन जो बाबा ने सिखाया है, किसी भी आत्मा का, व्यक्ति या वैभव का सहारा नहीं पकड़ो। जैसे चिड़िया तिनके का भी सहारा पकड़ती है ऐसे हमको नहीं पकड़ना है, स्वतंत्र रहना है। एक बल एक भरोसे के आधार से चलना है। जो हमारे संग में होगा उसको वह रंग चढ़ेगा। हमारा फर्ज क्या कहता है? मेरी अपने लिए जिम्मेवारी क्या है? एक सेकण्ड में अन्दर से हर बात को समझकर सहज पार करते जाना। जैसे बाबा ने कहा कोई पहाड़ भी सामने आता है, उसको देखते अपना रास्ता लेकर आगे बढ़ते चलो। कैसी भी बातें आएं अन्दर से अपना रास्ता निकाल लें। हमको मंजिल पर पहुंचना है। बातें तो रूप बड़ा- कुछ भी हो जाए बड़ा धारण करके सामने आएंगी लेकिन हमको टाइम पर पहुंचना है। इतनी युक्ति साइलेंस से निकालनी है। हम तो चलें लेकिन हमको देखकर सबको रास्ता सहज लगे। यदि हम अच्छी तरह से आराम से आगे बढ़ते रहते हैं तो यह भी पुण्य आत्मा बनने का बहुत अच्छा साधन है, युक्ति है, जो हमें देख और भी चलने लगें।

> जैसे चिड़िया तिनके का भी सहारा पकड़ती है ऐसे हमको नहीं पकड़ना है, स्वतंत्र रहना है। एक बल एक भरोसे के आधार से चलना है।

अव्यक्त इशारे

अपनी बात बाबा से अधिकार से कहो, बाबा आप जानो...

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

मैं ओरीजनल आत्मा हूं इस नॉलेज को स्मृति में रखो। वैसे जो भी कोई याद आता है, व्यक्ति या वस्तु याद आती है तो जरूर उससे कोई न कोई प्राप्ति होती है। बाबा से क्या-क्या प्राप्ति होती है, वह हमारे सामने इमर्ज होनी चाहिए। कोई किसको लायक बनाता है, तो भी उसकी याद आती है। मैं बेसमझ था, लेकिन इसने मेहनत करके ऐसा योग्य बना दिया। कमाने के योग्य, रॉयल्टी से चलने के योग्य बना दिया। बाबा ने हमको क्या-क्या प्राप्ति कराई है और क्या-क्या बनाया है, यह दोनों ही बातें अगर सदा इमर्ज रहें तो बाबा के साथ का अनुभव अवश्य होगा। अधिकार रखो। बाबा आया किसलिए है! बाबा कहता- मैं ऑफर करता हूं, तुम मेरे साथ को प्रयोग करो। मेरे को यूज करो। यह कोई कम बात नहीं है? तो क्यों नहीं हम अधिकार रखें। बाबा बंधा हुआ है। ऐसे नहीं बाबा आपने कहा था ना, आप करेंगे ना? आप करो न ऐसे चिल्लाओ नहीं। हमारा अधिकार है, बाबा बंधा हुआ है। भगवान कभी अपनी प्रतिज्ञा से बदल नहीं सकता। हम बदल सकते हैं, भगवान नहीं बदल सकता। तो अधिकार से बाबा को कहो, बाबा आप जानो। हम सबका बाबा से प्यार है, याद भी है लेकिन इमर्ज रूप में नहीं रहती है। कोई जज है, लेकिन इमर्ज रूप में स्मृति नहीं है कि मैं जज हूं, घर में घरू बन जाएगा, बाप बन जाएगा, भाई बन जाएगा तो वह नशा नहीं होता है। कुर्सी पर बैठने से वह इमर्ज होता है, तो वह नशा रहता है।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी), पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

- बाबा बार-बार कहते यूज़ करो अर्थात् स्मृति में लाओ।
- अनुभव में खो जाओ यह है यूज़ करना। यह सहज है या मुश्किल है?

इसी रीति से बाबा भी कहता है- निश्चय है, नशा है लेकिन मर्ज रहता है, काम में नहीं लाते हैं। कोई भी चीज बढ़िया है लेकिन काम में नहीं लाएं तो वह चीज पड़े-पड़े पुरानी हो जाएगी। काम में नहीं लाया तो उसका फायदा तो लिया ही नहीं। बाबा कहता हैं आप सभी बच्चों में शक्तियां, गुण सबकुछ है, नशा भी है प्यार भी है लेकिन टाइम पर यूज़ नहीं करते हो। किसकी आदत होती है चीज़ बहुत अच्छी संभाल कर रखेंगे लेकिन टाइम पर वह याद नहीं आएगी। सामने होते भी नहीं मिलती। परेशान होते रहते। फिर जब समय पूरा हो जाएगा तब याद आएगी।

भटकती हुई बुद्धि होती है तो जजमेंट ठीक नहीं होती है। बाबा ने जो पाठ पक्का कराया है कि टाइम पर यूज़ करो। जब बाबा की आफर है कि मैं तुम्हारे साथ हूं तो बाबा की ऑफर आप क्यों नहीं यूज़ करते? बाबा से प्यार तो है न ऐसा कोई नहीं जो कहे मैंने सुना है, लेकिन दिल से प्यार नहीं है। बाबा से सबका दिल से प्यार है। जब प्यार है तो प्यार के साथ प्राप्ति को भी इमर्ज करो। बाबा बार-बार कहते यूज़ करो अर्थात् स्मृति में लाओ। अनुभव में खो जाओ यह है यूज़ करना। यह सहज है या मुश्किल है? सहज करेंगे तो सहज हो जाएगा। मुश्किल कहेंगे तो छोटी चीज मुश्किल हो जाती है। बाबा हमें कितने नशे की बातें सुनाते हैं। अगर वह इमर्ज हों, बाबा सागर है तो मैं मास्टर हूं। ऐसे अगर स्मृति आएगी तो स्मृति के नशे से आप असम्भव से सम्भव कर सकते हैं। क्रमशः

ओमप्रकाश भाई की स्मृति में इंदौर ओमशांति भवन में मीडिया विमर्श आयोजित

समाज और विश्व में शांति के लिए राष्ट्र प्रथम का भाव सर्वोपरि : प्रखर श्रीवास्तव

शिव आमंत्रण, इंदौर।

ब्रह्माकुमारीज के मीडिया प्रभाग के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं इंदौर ज़ोन के क्षेत्रीय निदेशक रहे राजयोगी ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश 'भाईजी' की 10वीं पुण्य स्मृति दिवस पर न्यू पलासिया स्थित ज्ञान शिखर, ओमशांति भवन में मीडिया विमर्श (राउंड टेबल डिस्कशन) का आयोजन किया गया। विमर्श का विषय था- 'समाज में शांति, एकता एवं विश्वास को बढ़ावा देने में मीडिया की भूमिका'।

कार्यक्रम में नई दिल्ली से मुख्य अतिथि के रूप में पधारे डीडी न्यूज के वरिष्ठ सलाहकार संपादक प्रखर श्रीवास्तव ने कहा कि वर्तमान दौर में मीडिया का स्वरूप तेजी से बदला है और सोशल मीडिया ने इसे गहराई से प्रभावित किया है। समाज में जो गलत हो रहा है, उसे सामने लाना भी मीडिया की जिम्मेदारी है, क्योंकि सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को दिखाना आवश्यक है। आतंकवाद और व्हाइट कॉलर टेररिज्म जैसे विषयों पर चर्चा करना नकारात्मकता नहीं, बल्कि समाज को सही दिशा देना है। उन्होंने कहा कि पत्रकार का पहला भाव 'राष्ट्र प्रथम' होना चाहिए और देश सर्वोपरि रहना चाहिए।

इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका बीके हेमलता दीदी ने कहा कि वर्तमान समय में आपसी मतभेद, अविश्वास और तनाव के कारण वसुधैव कुटुम्बकम की भावना कमजोर होती जा रही है। इससे भय, असुरक्षा और अशांति का वातावरण बन रहा है।

कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय, रायपुर के पूर्व कुलपति डॉ. मानसिंह परमार ने कहा कि यदि पत्रकार राजयोग से जुड़ें, तो वे शांति और एकता की दिशा में प्रभावी कार्य कर सकते हैं। 'पत्रिका' के संपादक अनिल कर्मा ने कहा कि मीडिया की भूमिका उत्प्रेरक से अधिक नहीं होनी चाहिए। इंदौर समाचार के संपादक विवेक सेठ, प्रजातंत्र के संपादक कीर्ति राणा, दैनिक दोपहर के संपादक नवनीत शुक्ला, भारत एक्सप्रेस के समूह संपादक सुदेश तिवारी, स्वदेश के संपादक शक्ति सिंह परमार, मंदसौर जिला प्रेस क्लब के संरक्षक बृजेश जोशी, महिला स्टेट प्रेस क्लब की अध्यक्ष शीतल रॉय, सेज यूनिवर्सिटी, इंदौर की विभागाध्यक्ष (मीडिया) जमुना मिश्रा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन जनमंत्र न्यूज़ रायपुर की कार्यकारी संपादक प्रियंका कौशल ने किया।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी अनिता दीदी ने सभी को राजयोग की अनुभूति कराई। ब्रह्माकुमारी ऊषा दीदी ने व्यसन मुक्ति की शपथ दिलाई। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में नई दिल्ली, इंदौर, रायपुर, देवास, मंदसौर, उज्जैन, आदि शहरों के संपादक, पत्रकार, और मीडिया स्टूडेंट्स उपस्थित रहे।

शांति, समत्व और ईश्वरीय प्रेम का दिया संदेश

शिव आमंत्रण, चेन्नई | समत्व - अंतर धार्मिक क्रिसमस समारोह में अभिनेता तथा तमिलगा वेट्री कझगम के संस्थापक एवं अध्यक्ष विजय के आमंत्रण पर ब्रह्माकुमारी बहनों ने भाग लिया। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से डॉ. बीके मुथुमणि दीदी को विशेष रुप से आमंत्रित किया गया, जिन्होंने मंच से शांति, समत्व और ईश्वरीय प्रेम का सशक्त संदेश दिया। उनका संदेश केवल सुना नहीं गया, बल्कि गहराई से अनुभव किया गया। सभागार में उपस्थित जनसमूह तालियों से गूंज उठा और कुछ क्षणों के लिए ऐसा वातावरण बना जहाँ मौन स्वयं एक संदेश बन गया।

जीवन में उत्कृष्टता हेतु मूल्य-आधारित शिक्षा विषय पर सात दिवसीय सेमिनार आयोजित

5000 शिक्षकों को पढ़ाया मूल्य शिक्षा का पाठ

शिव आमंत्रण, उन्नाव, उप्र।

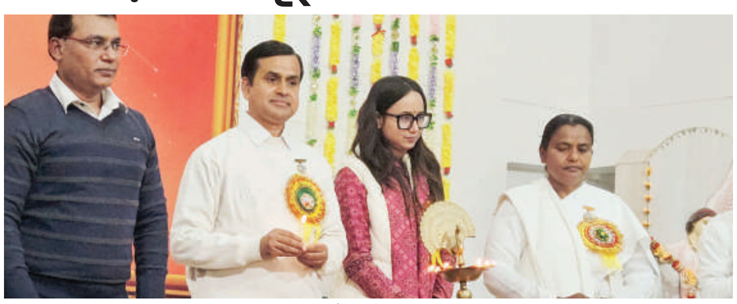

ब्रह्माकुमारीज नंदनवन के भव्य सभागार में शिक्षकों के लिए जीवन में उत्कृष्टता हेतु मूल्य-आधारित शिक्षा विषय पर सात दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें जिलेभर के जूनियर कॉलेजों से लगभग 5000 शिक्षकों ने अलग-अलग समूहों में सहभागिता की। यह आयोजन जिला प्रशासन एवं उन्नाव जिला शिक्षा विभाग के सहयोग से ब्रह्माकुमारीज द्वारा 12 से 19 दिसंबर 2025 तक सेमिनार एवं रिट्रीट के रूप में आयोजित किया गया।

इसमें मुख्य वक्ता माउंट आबू से आए प्रो. ओंकार चंद ने कहा कि नैतिक व मानवीय मूल्यों से हमारा जीवन मूल्यावान बनता है। आज के समाज में मूल्य आधारित शिक्षा जो विद्यार्थियों को अच्छा इंसान व नागरिक बना सके की बहुत जरूरत है। मानव जीवन की वास्तविक उत्कृष्टता तब प्रकट होती है, जब व्यक्ति के देहावसान के बाद लोग उसे उसके श्रेष्ठ कर्मों के कारण स्मरण करें और उसे प्रेरणा के रूप में अपनाएं। मुख्य अतिथि आईएएस सुश्री कृतिराज ने कहा कि केवल डिग्री प्राप्त कर नौकरी हासिल कर लेना ही जीवन की सफलता नहीं है। पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में संतुलन, स्वयं की संतुष्टि और दूसरों की संतुष्टि यही श्रेष्ठ एवं सफल जीवन की पहचान है। ब्रह्माकुमारी संस्थान राजयोग शिक्षा के माध्यम से समाज में श्रेष्ठ संस्कारों का बीजारोपण कर श्रेष्ठ संसार के निर्माण के लिए निष्ठापूर्वक कार्य कर रहा है। इस दौरान जिला मुख्य विकास अधिकारी, सुनील दत्त, जिला विद्यालय निरीक्षक शैलेंद्र कुमार पांडे, बेसिक शिक्षा अधिकारी, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कुसुम दीदी एवं नंदनवन के प्रबंधक बीके रामपाल की गरिमामयी उपस्थिति में दीप प्रज्वलन द्वारा सात दिवसीय रिट्रीट एवं शिविर का शुभारंभ किया गया।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, समस्तीपुर, बिहार | ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित कल्याणकारी भवन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी रानी दीदी व भूमि दाता रामगोपाल सुरेका एवं चंद्रलेखा सुरेका। इस दौरान अनीता बहन, कंचन बहन, स्नेहा बहन, सविता बहन, कृष्ण भाई भी मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, नवसारी, गुजरात | हॉर्टिकल्चर पॉलिटेक्निक कॉलेज में ब्रह्माकुमारीज़ के यातायात एवं परिवहन प्रभाग द्वारा सुरक्षित भारत अभियान के तहत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सेवाकेंद्र संचालिका बीके गीताबेन ने सभी विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा की प्रतिज्ञ कराई। इस दौरान प्राचार्य डॉ. एमपी अहीर विशेष रुप से मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, हरिनगर, दिल्ली | एमसीएल सरस्वती बाल मंदिर विद्यालय, हरि नगर में विद्या भारती, दिल्ली प्रांत एवं समर्थ शिक्षा समिति के संयुक्त तत्वावधान में सप्त शक्ति संगम - नारी शक्ति का उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें बीके स्नेहा बहन एवं बीके प्रतिभा बहन ने महिलाओं को आत्मबोध, आत्मसम्मान और आंतरिक जागरण के माध्यम से सशक्त बनने का मार्ग बताया।

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली | माउंट आबू मुख्यालय की ओम शांति प्रोडक्शन की बीके प्रभा बहन को आध्यात्मिक क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान एवं राजयोग ध्यान को जीवन पद्धति के रुप में अपनाने के लिए लोगों को प्रेरित करने हेतु प्रतिष्ठित "एक्स्ट्राऑर्डिनरी इंस्पायरिंग इंडियंस अवॉर्ड" से सम्मानित किया गया। यह सम्मान 13 दिसंबर 2025 को रेडिसन ब्लू प्लाज़ा होटल, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बैडमिंटन खिलाड़ी साइना नेहवाल द्वारा प्रदान किया गया।

शिव आमंत्रण, गया, बिहार | नगर में आयोजित 20वीं त्रिपिकट जाप समारोह में माउंट आबू से गीता ज्ञान विदुषी ब्रह्माकुमारी राजयोगिनी ऊषा दीदी ने शिरकत की और गीता ज्ञान व ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाओं पर अपने विचार व्यक्त किए। साथ ही बोधगया सेवाकेन्द्र की संचालिका बीके सुनीता दीदी और बीके प्रतिमा दीदी ने भी भाग लिया।

अगर घर में एक व्यक्ति भी स्वयं को चेंज कर लेता है तो घर मंदिर बन सकता है : बीके शिवानी दीदी

शिव आमंत्रण, अहमदाबाद। ब्रह्माकुमारीज़ इंडिया कॉलोनी सेवाकेंद्र द्वारा श्रेष्ठ विचार, मधुर व्यवहार, सुखमय संसार कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में पधारीं अंतरराष्ट्रीय प्रखर वक्ता बीके शिवानी दीदी बताया कि कैसे अपने संसार में लोगों के साथ मधुर व्यवहार कर अपना संसार सुखमय बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि हरेक व्यक्ति स्वयं के अंदर दैवी गुण धारण देवता बन सकता है और जीवन को सुखी बनाकर अपने घर को मंदिर बना सकता है। अगर घर में एक व्यक्ति भी स्वयं को चेंज कर लेता है तो घर मंदिर बन सकता है। कार्यक्रम में मेयर प्रतिभा जैन, विधायक कंचनबेन रादडिया, दिनेश कुशवाह, मणिनगर सब जोन इंचार्ज नेहा दीदी विशेष रूप से मौजूद रहीं। मंचासीन मेहमानों का शॉल पहनाकर सम्मान किया गया। तत्पश्चात दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ किया गया। गायक डॉ. बीके दामिनी बहन ने अपने सुरीली आवाज से मधुर गीतों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध दिया था। इंडिया कॉलोनी सेवाकेंद्र की प्रभारी बीके भानुबेन ने बताया कि कार्यक्रम में उद्योगपति, डॉक्टर्स, बिल्डर और ऑफिसर्स सहित पांच हजार से भी अधिक लोग मौजूद रहे।

कार्यक्रम में 200 वीआईपी सहित पांच हजार से अधिक लोगों ने लिया भाग

न्यायिक प्रक्रिया में शांत और सत्यता दोनों ही गुण जरूरी हैं : जस्टिस राठी

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में अधिवक्ताओं के लिए आत्मा के नियम मूल्यनिष्ठ न्यायिक प्रक्रिया विषय पर राष्ट्रीय लांचिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सिरोही तथा जालोर के अधिवक्ता शामिल हुए। कार्यक्रम में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायमूर्ति बीडी राठी ने कहा कि जब हम न्यायिक प्रक्रिया में होते है तो लोगों का हमारे ऊपर पूरा भरोसा होता है। इसलिए हमें अपनी विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए शांत और सत्यता का पालन करना अति आवश्यक होता है।

उन्होंने कहा कि हम अपने व्यक्तिगत जीवन से कह सकते हैं कि राजयोग ध्यान और ईश्वरीय प्रेरणा हमारे जीवन को ज्यादा सकारात्मक बनाती है। इसलिए राजयोग ध्यान का प्रतिदिन प्रयास करना चहिए।

ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि ईश्वर की अदालत सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। हम यहां कुछ भी न्याय की जगह अन्याय कर सकते हैं। परन्तु परमात्मा के घर में यह नहीं चलता है। वहां सबकुछ उजागर होता, इसलिए हमें परमात्मा के न्यायालय के लिए इस बात का ध्यान रखना चाहिए। न्यायिक विंग की राष्ट्रीय कोआर्डिनेटर बीके लता दीदी ने कहा कि हमारी सोच और आत्मा की ताकत पर हम सही और सटीक न्यायिक प्रक्रिया को पारदर्शी बना सकते हैं। इस दौरान उच्च न्यायालय के वरिष्ठ वकील बीके रुप सिंह राठी, बालोतरा बार एसोसिएसशन के अध्यक्ष ओम प्रकाश दवे, दुसूरी के अध्यक्ष मुकेश कुमार श्रीमाली, पिण्डवाड़ा के अध्यक्ष अमर सिंह, बाली के अध्यक्ष विजय चैधरी, लायन और अविनाश शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

शिव आमंत्रण, मॉस्को, रुस | भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने मॉस्को दौरे के समापन पर भारतीय दूतावास का दौरा किया, जहां उन्होंने कज़ान और येकतेरिनबर्ग में नए जनरल कॉन्सुलेट्स का उद्घाटन किया और भारतीय समुदाय से भी मुलाक़ात की। राजदूत द्वारा अतिथियों का परिचय कराने के दौरान ब्रह्माकुमारीज़ की निदेशिका बीके सुधा दीदी ने विदेश मंत्री को ब्लेसिंग कार्ड्स भेंट किया। इसके अलावा ऑफिसर्स विक्ट्री क्लब मॉस्को में मोटिवेशनल कार्यक्रम आयोजित किया गया।

गुजरात के पाटन में आयोजित कार्यक्रम में प्रेरक वक्ता शिवानी दीदी ने कहा-

हम अपने संस्कारों को परमात्मा की याद से दैवी बनाएंगे तो यह सृष्टि भी परिवर्तन होकर दैवी सृष्टि बन जाएगी

शिव आमंत्रण, पाटन, गुजरात। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा खोड़ाभा हॉल में संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन विषय पर विशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें नगर के गणमान्य लोगों सहित पांच हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी ने कहा कि आज मनुष्य आत्माएं समय के साथ कमजोर होती जा रही हैं। इससे हमारे हमारे जो दैवी संस्कार थे यानी देने वाले संस्कार थे, वह अब लेने वाले बन गए हैं। अब अगर हम अपने संस्कारों को परमात्मा की याद व राजयोग की शिक्षा से वापस दैवी संस्कार बनाएंगे तो यह सृष्टि भी परिवर्तन होकर दैवी सृष्टि बन जाएगी। जहां हर मनुष्य आत्मा देव तुल्य होगी व सुख-शांति, पवित्रता व सम्पन्नता से संपन्न होगी।

पाटन विधायक डॉ. किरीट भाई पटेल ने शिवानी दीदी की शिक्षा के विषय में बताया कि इतनी पढ़ी-लिखी बहनें इस संस्था में अपनी सेवाएं दे रही हैं और विश्व के परिवर्तन के कार्य में लगी हुई हैं, तो

भारत एक दिन विश्व गुरु बनकर ही रहेगा। हुडको के डायरेक्टर केसी पटेल ने कहा कि मैं इस संस्था को बचपन से जानता हूं। इन बहनों ने बहुत मेहनत करके पाटन में बहुत अच्छी सेवाएं की हैं और बहुत लोगों की जिंदगी में परिवर्तन किया है। इस मौके पर जिला पंचायत पाटन के पूर्व अध्यक्ष मोहन भाई पटेल सहित नगर के पांच हजार से अधिक लोग मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, नेपाल| ब्रह्माकुमारीज़ वीरगंज द्वारा नेपाल के तीन जिलों–बारा, पर्सा और रौतहट तथा भारत-नेपाल सीमावर्ती क्षेत्रों में 50 वर्षों से संचालित आध्यात्मिक एवं सामाजिक सेवाओं की स्वर्ण जयंती मनाई गई। इसमें काठमाण्डु से पधारीं क्षेत्र प्रभारी एवं निदेशक राजयोगिनी डॉ. राज दीदी ने दीप प्रज्वलन कर और शिव ध्वज फहराकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। वीरगंज में ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं की शुरुआत 1974 में मारवाड़ी धर्मशाला से हुई, जब साकार बाबा की पालना और दादी चंद्रमणी के निर्देशन में राजयोगिनी डॉ. राज दादी ने ईश्वरीय सेवाओं का बीजारोपण किया। आज यह सेवा तीन जिलों के साथ-साथ भारत-नेपाल सीमा क्षेत्रों–जैसे रक्सौल, आदापुर, वैरगनिया और घोड़ासहन तक विस्तृत हो चुकी है।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-
वार्षिक मूल्य 210 रुपए तीन वर्ष 630 रुपए
मो 9414172596, 8521095678
Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता
प्रधान संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8538970910, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer
A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 9471854331
Scan To Pay

35वां नेशनल एनर्जी कंजर्वेशन अवॉर्ड्स...

ब्रह्माकुमारीज़ के जगदंबा भवन को मिला देशभर में सर्वश्रेष्ठ रेजिडेंशियल यूनिट का प्रथम पुरस्कार

राष्ट्रपति ने बीके सुनंदा दीदी को प्रदान किया पुरस्कार, एनर्जी एफिशिएंसी, ऊर्जा के किफायती एवं विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा पर मिली राष्ट्रीय पहचान

शिव आमंत्रण, पुणे/नई दिल्ली।

देशभर में नेशनल एनर्जी कंजर्वेशन डे पर ऊर्जा दक्षता और ऊर्जा संरक्षण के महत्व को लेकर जागरूकता फैलाने तथा नागरिकों को सस्टेनेबल भविष्य हेतु ऊर्जा-बचत की आदतें अपनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसी क्रम में 35वां नेशनल एनर्जी कंजर्वेशन अवॉर्ड्स-2025 के अंतर्गत ब्रह्माकुमारी संस्था के जगदंबा भवन, पुणे को ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट, निरंतर और अनुकरणीय कार्यों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार के लिए चयनित किया गया। जगदंबा भवन को पूरे भारत से एनर्जी बचाने के लिए सर्वश्रेष्ठ रेजिडेंशियल यूनिट की प्रतिष्ठित श्रेणी में यह सम्मान प्राप्त हुआ है।

14 दिसंबर 2025 को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में आयोजित भव्य समारोह में ब्रह्माकुमारी जगदंबा भवन, पुणे की निदेशिका बीके सुनंदा दीदी को यह पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय द्वारा आयोजित किया गया था। जगदंबा भवन को यह राष्ट्रीय पहचान एनर्जी एफिशिएंसी, ऊर्जा के किफायती एवं विवेकपूर्ण उपयोग, रिन्यूएबल एनर्जी स्रोतों को अपनाने तथा इको-फ्रेंडली और सस्टेनेबल लाइफस्टाइल को बढ़ावा देने हेतु अपनाए गए आधुनिक तकनीकी उपायों के कारण प्राप्त हुई है। ऊर्जा अपव्यय रोकने के लिए बनाई गई प्रभावी योजना और सभी निवासियों की सक्रिय एवं सामूहिक सहभागिता इस सफलता की प्रमुख विशेषताएं रहीं। जगदंबा भवन परिसर में सोलर एनर्जी सिस्टम, ऊर्जा बचाने वाले उपकरणों का उपयोग, प्राकृतिक प्रकाश एवं वेंटिलेशन की अधिकतम व्यवस्था के साथ-साथ ऊर्जा संरक्षण पर नियमित अवेयरनेस प्रोग्राम भी संचालित किए जाते हैं। इन प्रयासों से न केवल ऊर्जा की उल्लेखनीय बचत हुई है, बल्कि कार्बन उत्सर्जन में भी प्रभावी कमी दर्ज की गई है। यह राष्ट्रीय सम्मान ब्रह्माकुमारी संस्था के ऊर्जा संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण और मूल्य-आधारित जीवन शैली के विजन को सशक्त रूप से प्रतिबिंबित करता है। यह उपलब्धि एनर्जी कंजर्वेशन सस्टेनेबल भविष्य की दिशा में एक मजबूत कदम है, जो समाज को जागरूकता, जिम्मेदारी और सामूहिक प्रयास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

तनाव से बचने के लिए बच्चा बन जाएं और मुस्कुराना सीखें

शिव आमंत्रण, रायपुर, छग।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा इंडोर स्टेडियम में जीवन प्रबन्धन कला विषय पर तीन दिवसीय शिविर आयोजित किया गया। इसमें इन्टरनेशनल माइंड-मेमौरी मैनेजमेन्ट ट्रेनर ब्रह्माकुमार शक्तिराज सिंह ने बताया कि तनाव से बचने के लिए बच्चा बन जाएं और मुस्कुराना सीखें। जब हम तनाव में होते हैं तो इससे हमारी धमनियों में ब्लॉकेज होना शुरू हो जाता है। कोलेस्ट्रॉल बढ़ जाता है, जिससे हार्ट अटैक का खतरा बढ़ जाता है। दूसरे दिन विचार परिवर्तन से जीवन परिर्वन विषय पर कहा कि विचारों का हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अपनी सोच को बदल लो तो जीवन बदल सकता है। जीवन को खुशहाल बनाने के लिए माइण्ड का सेट होना जरूरी है। माइंड सेट नहीं करेंगे तो पूरा जीवन अपसेट हो सकता है। जीवन में खुशियां पाना चाहते हैं तो हमें वर्तमान में जीना सीखना होगा। न तो बीती बातों का चिन्तन करें और न ही भविष्य की चिन्ता करें। अभी जो हमारे पास है उसका आनन्द लें। हमारा अवचेतन मन एक जिन्न की तरह है। हम उसे जो भी कमाण्ड देंते हैं वह उसे ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेता है।

समाजसेवा प्रभाग हिसार : दो हजार से अधिक वरिष्ठ नागरिकों का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, हिसार, हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ हिसार द्वारा समाज सेवा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे संगमः "गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन अभियान के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य पीढ़ियों के बीच आए अंतर को मिटाने के साथ-साथ वरिष्ठ नागरिकों को सम्मान, सुरक्षा और आत्मगौरव का अनुभव कराना रहा। यह अभियान वर्तमान में पूरे भारतवर्ष में संचालित हो रहा है।

इस अवसर पर दो हजार से अधिक वरिष्ठ नागरिकों का विशेष सम्मान किया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें पटका, मफलर एवं आध्यात्मिक साहित्य भेंट किया गया। कार्यक्रम ब्रह्माकुमारीज़ हिसार की प्रारंभिक सेवाओं के प्रमुख स्तंभ रहे स्व. बीके डॉ. राम प्रकाश भाई की पुण्य स्मृति में समर्पित रहा। इसमें ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी, प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके बीरेंद्र भाई, सबजोन की संचालिका बीके रमेश कुमारी दीदी, महापौर प्रवीण पोपली ने अपने विचार व्यक्त किए।

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन, आबू रोड

सीख और आत्म चिंतन से परमात्म अनुभूति की ओर...

सीख। मानव जीवन सीखने की एक निरंतर और सतत प्रक्रिया है। जीवन यात्रा हर पल एक सीख लिए होती है। जब हम साक्षी भाव से देखते हैं तो पाते हैं कि अब तक जीवन में जो कुछ भी घटित हुआ है, उन सभी घटनाओं में कोई न कोई बड़ी सीख समाई हुई थी। किसी विद्वान ने कहा है- वह इंसान महान नहीं है जो गलतियां नहीं करता है, महान वह है जो गलतियों से सबक लेकर उसे दोहराता नहीं है। गलतियां होना मानवीय स्वभाव है, स्वाभाविक और निश्चित हैं। जब तक गलती नहीं करेंगे तो यह कभी नहीं जान पाएंगे कि अमुख कार्य को और बेहतर तरीके से भी किया जा सकता है। भारतवर्ष में सबसे कठिन परीक्षा यूपीएससी की मानी जाती है और इसे उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों के जीवन का अध्ययन किया जाए तो एक बात निकलकर सामने आती है कि उन्होंने अपनी तैयारी करते हुए एक बार की गई गलती को कभी दोहराया नहीं है। उनका यही गुण और विशेषता उनकी सफलता में मील का पत्थर साबित हुई है।

सीख का वास्तविक अर्थ है- अनुभव से मिली समझ और आत्म-सुधार का मार्ग। सीख केवल किताबों में लिखा ज्ञान नहीं है, बल्कि वह बुद्धि और विवेक है जो हमें बताती है क्या सही है और गलत क्या है? कैसे जीवन में बेहतर निर्णय लें? कैसे अपने व्यवहार और सोच को सुधारें? कैसे जीवन में संतुलन बनाए रखें? कैसे संबंधों को मधुर और प्रेमपूर्ण बनाएं? कैसे जीवन को आनंदमय बनाएं? कैसे सफलता की मंजिल पर पहुंचे?

किसी व्यक्ति में कोई अवगुण है जो उसकी सफलता में बाधक बना हुआ है। इस बात को संबंधित व्यक्ति भी जानता है, इसके बावजूद वह उसे बदल नहीं पाता है। इसके पीछे मुख्य कारण यही है कि उसने कभी आत्म चिंतन के माध्यम से उसे दूर करने के लिए गहराई से चिंतन नहीं किया है। मन की गहराई में जाकर समाधान के उपाय नहीं खोजे हैं। मन को गहरा आघात नहीं लगा है। मन को लगा गहरा आघात (सकारात्मक या नकारात्मक) व्यक्ति का पूरा जीवन बदलकर रख देता है।

अनुभव से सीख: एक व्यक्ति जितना अपने जीवन के कड़वे और मधुर अनुभवों से सीखता है, शायद उतना कहीं से नहीं सीख पाता है। ऐसा अनुभव उसके जीवन की निधि होती है, क्योंकि उसने उस पल को जीया और सीखा है। जीवन की सबसे ज्यादा समझ, ज्ञान और जीने की कला का विकास विकट परिस्थितियों और संकट में ही होता है। ऐसे समय में ही हमें अपने-पराए और मनुष्यता का सच्चा ज्ञान होता है। इसलिए कहा जाता है- जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि, जहां न पहुंचे कवि, वहां पहुंचे अनुभवी।

गुरु और वरिष्ठों से सीख: एक बच्चे की मानसिक अवस्था पर सबसे ज्यादा प्रभाव उसके मात-पिता, गुरुजन और घर-परिवार के वरिष्ठों का पड़ता है। बचपन में माता-पिता, बड़ों और गुरुजन की दी हुई सीख एक बालक के लिए नए मार्ग खोल देती है। वह सीख उस अबोध मन में स्वर्ण अक्षरों की तरह अमिट और स्थायी बन जाती है। बचपन में दादा-दादी, नाना-नानी से कहानियों के माध्यम से दी गई सीख जीवनभर मार्गदर्शन करती है। चूंकि वह जीवन के एक लंबे दौर से गुजर चुके होते हैं और अनेक कड़वे व सुखद अनुभवों की खान उनके पास होती है, ऐसे में यदि हम उनके अनुभवों के आधार पर उसे शिरोधार्य करते हैं तो वह ज्ञान और शिक्षा अन्य से श्रेष्ठ बनाती है। सीख का उद्देश्य केवल जानना नहीं, बल्कि जीवन में परिवर्तन लाना है।

आत्म-चिंतन से सीख: आज ज्यादातर लोग भागदौड़ और प्रतिस्पर्द्धी जीवनशैली में इतने खो गए हैं कि स्वयं से संवाद करना ही भूल गए हैं। स्वयं में सुधार, स्व उन्नति, स्व-शासन और आंतरिक सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए सबसे जरूरी और अहम है- आत्म चिंतन करना। परचिंतन पतन की जड़ है, आत्म चिंतन उन्नति की सीढ़ी है। बिना आत्म चिंतन के मन के अंतस में छिपा अनमोल ज्ञान जीवन फलक पर साकार नहीं होता है। आत्म चिंतन ही वह जादुई शक्ति है जिससे हम जीवन और स्वयं से जुड़े अनछुए पहलुओं को जान पाते हैं। जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझ पाते हैं। आध्यात्म प्रेमियों और योगियों ने आत्म चिंतन से जीवन के अनुसुलझे पहलुओं को स्पष्ट किया है।

आत्म चिंतन से आत्म ज्ञान...: आत्म चिंतन से आत्म ज्ञान होता है और आत्म ज्ञान से होकर ही परमात्म ज्ञान, परमात्म अनुभूति का रास्ता जाता है। राजयोग ध्यान आत्म चिंतन की वह महान, दिव्य, अनोखी शैली और विधा है जो हमें परमात्मा के समीप ले जाती है। हम सभी के जीवन का अंतिम उद्देश्य भी परमात्म अनुभूति, प्राप्ति और मंगल मिलन ही होता है। राजयोग ध्यान वही संजीबनी बूटी है जो आत्मा की सोई हुई दिव्य शक्तियों और विशेषताओं को पुनः जगाकर उसे दिव्य प्रकाश से आलोकित कर देती है। आत्मा को सत्य ज्ञान मिलता है, जिसका प्रकाश जीवन को प्रकाशमय और आनंदमय बना देता है। (गीता 6.30) में लिखा है कि- यो माम् पश्यति सर्वत्र... अर्थात् जो हर जगह आत्मा और परमात्मा को देखता है, वही सच्चा ज्ञानी है। राजयोग साधना से निकला अमृत रूपी ज्ञान, अनुभव और अनुभूति आत्मा को आनंद स्वरूप परमात्मा से आत्म साक्षात्कार करा देता है। परमात्मा की यही शिक्षा है- हे! मनुष्य आत्माओं स्वयं को आत्मा निश्चय कर मुझ एक परमात्मा को निरंतर याद करो तो मैं तुम्हारा कल्याण कर दूंगा।

जीवन प्रबंधन

बीके शिवानी दीदी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज की टीवी ऑइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

सुबह-सुबह हमारा जैसा संकल्प होगा, वैसा ही संकल्प हमारा सारा दिन चलता रहेगा इसलिए पहला विचार हमारे पावरफुल एवं सकारात्मक होना चाहिए...

हमारे पास जो कुछ भी आया वह हमारे भेजे हुए संकल्पों का रिटर्न है

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

हमारे सोचने, बोलने और करने से जो शक्ति पैदा होती है, वह हमारा कर्म बनाती है। मैं किसी व्यक्ति से कैसे बात करूं यह मेरा कर्म है। और कोई व्यक्ति मुझसे कैसे बात करेगा यह मेरा भाग्य है। आप किसी पर विश्वास करें ये आपका कर्म। वो आप पर विश्वास करे या धोखा दे वह आपका भाग्य है। अब दिनभर में जो शक्ति हमारे पास लोगों के व्यवहार, परिस्थिति के रूप में आती है, यह हमारे कर्म का फल है, हमारा भाग्य है। समझने की बात यह है कि सब कुछ जो हमारे पास बाहर से आ रहा है, वह उसी का रिटर्न है जो एनर्जी हमने बाहर भेजी थी।

हम कर्म के भाग्य से, भाग नहीं सकते-

ठीक वैसे जैसे हम एक गेंद को दीवार पर फेंकते हैं तो वह लौटकर हमारे पास ही आती है। हम अपने कर्म के भाग्य से, भाग नहीं सकते हैं। किसी ने मुझे कुछ बुरा कहा, हम इस शक्ति का कुछ नहीं कर सकते हैं। लेकिन हमारी पकड़ गेंद पर तभी तक थी जब तक उसे फेंका नहीं गया था। लेकिन, जब कोई मेरी बेइज्जती करेगा तो मैं क्या सोचूंगी, कैसा व्यवहार करूंगी यह पूरी तरह से मेरे हाथ में है। मेरी सोच, बोल और प्रतिक्रिया एक नई गेंद है, जो मैंने उसी क्षण फेंकी है। अगर वापस मैंने भी गुस्सा किया तो मैंने एक काले रंग की गेंद वापस भेज दी है। अगर मैं शांत रही, प्यार से बात की, तो मैंने सफेद रंग की गेंद भेज दी। नया कर्म कौन-सा करना है वह पूरी तरह से मेरे हाथ में है। लेकिन होता क्या है-'उसने ऐसा क्यों कहा, उसने ऐसा क्यों किया'? ये सब करते-करते नई गेंद भी काले रंग की हो जाती है।

सबसे बड़ी कठिनाई है अहम-

पहले हमने काली गेंद भेजी थी इसलिए वैसी ही आई थी। अब फिर से वही भेज देंगे, तो फिर से वही लौटेगी। इस तरह से करते-करते घोर कलयुग आ गया और इस तरह से पूरा समाज काला हो गया। कोई मेरे साथ गलत करे और मैं उसके लिए दुआ करूं, क्या यह संभव है? सबसे बड़ी कठिनाई है अहम। जिसने मेरे साथ गलत किया उसके लिए बुरा सोचना सामान्य और स्वाभाविक है। सोचते-सोचते लोग कहते हैं भगवान इसको इस कर्म की सजा जरूर देगा। हम भगवान से उसका कुछ बुरा करने को कहते हैं। ये सारे काली गेंद भेज रहे हैं। अगर मुझे कोई नफरत की, गुस्से की, शक्तियां भेज रहा है तो इसका मतलब है कि कभी न कभी मेरी तरफ से ऐसी शक्ति गई थी। अब हम उसे बदल नहीं सकते हैं। लेकिन अब जब हम उनके लिए सोच रहे हैं तो ये भी सोच सकते हैं कि हिसाब-किताब आया था, खत्म हुआ।

क्षमा करो, आगे बढ़ो-

मेरे पिछले कर्मों का कोई कर्ज था चुकता हो गया। अब मेरा भी बहुत अच्छा चले और इसका भी। किसी के लिए बुरा सोचने की कोई सीमा नहीं होती है उसी तरह अच्छा सोचने की भी नहीं है। जरूरत है कि थोड़ा-सा अहंकार दबाकर, खुद पर थोड़ी-सी मेहनत करके, प्यार से खुद को रोक लें। जब हम किसी से नफरत करते हैं, तो मन की खुशी गायब हो जाती है। शरीर में कोई न कोई बीमारी लग जाती है। अगर हम कहें, बात खत्म हुई, क्षमा करो आगे बढ़ो। तो शरीर स्वस्थ हो जाएगा. क्योंकि, सफेद गेंद भेजी तो लौटकर भी तो वही आएगी।

...तो तनाव कम होगा

जैसे ही आत्मा शरीर से निकल गई तो शरीर कुछ नहीं कर सकता। सारी जिंमेदारियां खत्म। बच्चे वहां हैं लेकिन आप उनके लिए कुछ नहीं कर सकते। पेड़ पानी बिना नहीं रह सकता, गाड़ी पेट्रोल बिना नहीं चल सकती, शरीर भोजन के बिना नहीं चल सकता, लेकिन आत्मा चलती जा रही है जिसका परिणाम आज हमें दिखाई दे रहा है। हम छोटी-छोटी बातों से नाराज हो जाते हैं, उदास हो जाते हैं क्योंकि बहुत सालों या शायद कई जन्मों से आत्मा को पोषित करना ही भूल गए हैं। आत्मा को पोषित कैसे करना है यह हमें मालूम ही नहीं था।

आत्मा गलत तरीके से पोषित हो रही है-

आत्मा को सकारात्मक चिंतन से पोषित करने के बजाय कोई ऐसी चीजें डालनी शुरू कर दीं जो उसके लिए सही नहीं है तो उसका भी परिणाम दिखाई देने वाला है। हम सुबह उठते थे, तैयार होते थे, काम पर जाते थे, शाम को आते थे परिवार के साथ बैठते थे। ऐसा ही जीवन बहुत सालों से चल रहा था। हमें कभी-कभी थोड़ा गुस्सा आ जाता था, कभी हम थोड़े उदास हो जाते थे, फिर हम ठीक हो जाते थे। हम बहुत सारे लोगों के साथ सामंजस्य बैठा लेते थे, कभी-कभी नाराज भी हो जाते थे लेकिन हम वापस उनके साथ हो जाते थे। हां, यह है कि हम रोज सुबह-सुबह पूजा-पाठ करते थे, फिर सारा दिन सामान्य चलता था।

सुबह की वो थोड़ी सी पूजा-पाठ भी आत्मा के लिए पोषण थी। मन भी ठीक चल रहा था, शरीर भी ठीक चल रहा था। उस समय इलाज कम होते थे। तब इलाज उतना अच्छा नहीं होता था जितना आज हमारे पास है। लेकिन बीमारियां भी कम थीं। रिश्ते भी अच्छे चल रहे थे। पिछले 50 सालों से हमने भले पोषित नहीं किया लेकिन ज्यादा कुछ गलत भी नहीं खिलाया। अगर हम पिछले 20 साल को देखें तो हमने इसको बहुत ज्यादा गलत खिलाना शुरू किया है।

गलत पोषण से समस्याएं बढ़ती चली गईं

इससे क्या हुआ कि मन की बीमारियां बढ़ गईं, शरीर की बीमारियां बढ़ गईं, रिश्तों में जो तनाव व कड़वाहट बढ़ता जा रहा है। डिप्रेशन रेट बढ़ गया, हृदय रोग बढ़ गए, तलाक बढ़ गए, दुष्कर्म बढ़ गए। आज के बच्चों पर इतना असर क्यूं हो रहा है सूचनाओं का। बच्चों को स्कूल की पढ़ाई मिल रही है लेकिन आत्मा का पोषण नहीं। छोटी सी उम्र में ही उनके हाथ में फोन हैं, गैजेट्स हैं। वे आज अगर कार्टून भी देख रहे हैं तो उसमें भी हिंसा है। जब ये सारी चीजें आत्मा को बचपन से मिलनी शुरू हो जाएंगी तो आत्मा पोषित कहां होगी। मैंने अपनी सारी जिंमेदारियां निभाईं लेकिन इससे मेरी आत्मा खुश नहीं है और मैं संघर्ष का जीवन जीती हूं। इससे तो हम पीछे की पीढ़ी को भी नुकसान पहुंचा रहे हैं।

आत्मा का ध्यान नहीं रखने से शुरू हुई सारी समस्याएं

आज हमारे स्वास्थ्य पर इतना ध्यान क्यों दिया जा रहा है? क्योंकि भावनात्मक दबाव इतना ज्यादा है कि कोई न कोई समस्या शरीर के साथ चलती ही रहती है। इसका कारण यह है कि हमने आत्मा का ध्यान ही नहीं रखा। उसके कारण ही सारी समस्याएं आनी शुरू हो जाती हैं। अगर हम आत्मा का भी ध्यान रखें तो मन पर जो इतना ज्यादा दबाव है, इसके लिए मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। आप व्यायाम कर रहे हैं उस समय आप स्वयं को चेककर जांच करें कि हमारे सोच की गुणवत्ता क्या है? हम सेहतके लिए घूम रहे हैं लेकिन साथ-साथ नकारात्मक विचार उत्पन्न हो रहे हैं। इस विचार का असर सिर्फ हमारे मन पर ही नहीं बल्कि पूरे शरीर पर पड़ता है। जब तक हम यह महसूस नहीं करेंगे कि शारीरिक स्वास्थ्य पर भावनात्मक स्वास्थ्य का कितना गहरा प्रभाव पड़ता है, तब तक हम स्थिर और शांतचित्त नहीं रह सकते हैं। सुखमय और आनंदमय जीवन नहीं जी सकते हैं, इसलिए हमें अपनी आंतरिक शक्तियों को बढ़ाने की मेहनत करनी चाहिए।

समस्या- समाधान

- राजयोगी बीके सूरज भाई, माउंट आबू

परमात्मा से मिलन तर्कों का विषय नहीं, एक अनुभूति है

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान। बहुत महिमा है परमात्मा की वही सुखदाता है। बहुत महिमा है उस परमात्मा की जो वह ज्ञान का सागर है, प्रेम का सागर है, शांति का सागर है, महिमा तब ही होती है, जब कोई बहुत बड़ा-बड़ा काम करता है। कोई बहुत बड़ा आदमी है संसार में लेकिन वह अपने घर में है कुछ नहीं करता बहुत पढ़ा लिखा होकर भी कुछ करता नहीं है कोई उसकी महिमा गाएगा क्या। कोई जानेगा भी नहीं। कोई कुछ बड़ा अच्छा करता है गायन उसका ही होता है। उस परमात्मा ने बहुत सुख दिया है इसलिए उसको सुखदाता कहते हैं तो हमें उससे जुड़ जाना है उसके मिलन की सुखद अनुभूतियां करनी है।

परमात्मा से मिलन मनाया जा सकता है...

रोज सवेरे उठकर परमात्मा से मिलन बनाया जा सकता है और अगर कोई बहुत अच्छा योग अभ्यास कर ले तो जब चाहे मिलन मनाया जा सकता है। सारे दिन में 100 बार भी मना सकते हैं और उस मिलन की अनुभूति आपको यकीन दिलाएगी कि सच में परमात्मा से मिलन हो गया। जैसे मीठा कुछ खाने से हमें सोचना नहीं पड़ता कि मीठा था क्या उसकी मिठास स्वतः ही बताती है कि मीठा खाया है। भगवान से मिलन..... यह तर्कों का विषय नहीं यह अनुभूतियों का विषय है। तो इस मिलन की ओर हम चलेंगे पहले इनर जर्नी सभी अपने अंदर जाकर देखेंगे कि मैंने अपना इनर वर्ल्ड कैसा बनाया है।

अपने अंदर के संसार को देखना है...

एक यह बाहर का संसार है एक अंदर का अपना संसार है वह अंदर का संसार मेरा कैसा है उसमें मैंने सबके लिए प्रेम भरा है? सदभावनाएं भरी हैं? या नफरत भरी है बदले की भावना भरी है? या सुख देने की भावना भरी है, ईर्ष्या द्वेष भरा है या आगे बढ़ाने की भावना भरी है। हमारा अंदरूनी संसार कैसा है अंदर क्रोध की अग्नि जल रही है या शांति की शीतल छाया है सब चेक करेंगे।

समस्या कमजोर मन की रचना है...

हम जानते हैं आत्मा में 7 गुण होते हैं सुख शांति आनंद प्रेम शक्ति पवित्रता ज्ञान हमें उन को स्वीकार करना है मैं आत्मा शांत स्वरूप हूं, शांति मेरा नेचर है स्वीकार करें अपने अंदर भेज दे यह सच है मेरा मूल गुण शांति है क्रोध नहीं ऐसे ही दूसरे सभी गुणों को भी स्वीकार करेंगे। हम याद रखें हमारे हर एक संकल्प से एनर्जी क्रिएट होती है अगर हम नेगेटिव संकल्प क्रिएट कर रहे हैं तो नेगेटिव एनर्जी क्रिएट हो रही है जो हमारे ब्रेन में पहुंच रही है बॉडी पर इफेक्ट कर रही है चारों ओर का वातावरण वैसा बन रहा है। जितने सुंदर संकल्प हमारे मन में चलेंगे इतनी पावरफुल एनर्जी क्रिएट होगी जो अनेक समस्याओं को समाप्त करेगी। समस्याएं और कुछ नहीं कमजोर मन की रचना है।

हम सर्वशक्तिमान के बच्चे मास्टर सर्वशक्तिमान इससे हमारी सोई हुई शक्तियां जागृत हो जाएंगी...

हमें परमात्मा से कनेक्शन जोडक़र शक्तियां लेनी है उससे कुछ मांगना नहीं है कि भगवान हमें शांति दो यह दो वह दो। वह कह रहा अपने को इतना योग्य बनाओ कि तुम दूसरों की समस्या भी हल कर सको। वो परमात्मा हमारा लेवल ऊंचा उठा रहा है अब इस समय। उससे मांगने की जरूरत नहीं सोचो टाइगर का बच्चा क्या होगा? टाइगर ही होगा न। टाइगर का बच्चा अपने फादर को कहेगा कि मुझे थोड़ी ताकत दे दो। तो हमें भी भगवान से कुछ मांगना नहीं वह कहता है याद करो तुम सर्वशक्तिमान की संतान मास्टर सर्वशक्तिमान हो। तो ऐसी याद से सोई हुए शक्तियां जागृत हो जाएंगी। रोज सवेरे उठकर अपने को विचार दें कि मैं सर्वशक्तिमान की सन्तान मास्टर सर्वशक्तिमान हूं। इसे हम स्वीकार कर लें सवेरे उठते ही 108 बार लिखना है इसे। इससे हमारी सोई हुई शक्तियां जागृत हो जाएंगी। निरंतर मन में एक ही धुन लगी रहे मुझे ब्रह्मा बाप समान बनना ही है।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 Jan. 2026
» प्रकाशक व मुद्रकः करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » प्रधान संपादकः बीके कोमल » संपादकः बीके पुष्पेन्द्र